दैनिक

पुष्पांजली टुडे

नई सोच नई पहल

2 पेज

पेज 7

ग्वालियरः वर्षः 3 : अंकः 88 | ग्वालियर,शुक्रवार, 06 जनवरी 2023 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

एक नजर

फंसी थी अंजलि की बॉडी फिर भी 2 घंटे तक कार से घूमते रहे, पुलिस का कोर्ट में दावा, आरोपियों की 4 दिनों की रिमांड मिली

दिल्ली के कंझावला केस के आरोपियों को गुरुवार (5 जनवरी) को कोर्ट में पेश किया गया. पुलिस के सूत्रों ने कहा कि सुरक्षा कारणों से सभी आरोपियों को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए रोहिणी कोर्ट में पेश किया गया है. कोर्ट ने आरोपियों को चार दिन की पुलिस रिमांड पर भेजा है. दिल्ली पुलिस ने पांच दिन की रिमांड की मांग की थी. आपको बताते हैं कि कोर्ट की सुनवाई में क्या कुछ हुआ और अब तक मामले में क्या-क्या खुलासा हुआ है. कंझावला केस के आरोपियों की पुलिस हिरासत की मियाद खत्म होने के बाद उन्हें गुरुवार को कोर्ट में पेश किया गया. दिल्ली पुलिस ने कोर्ट से आरोपियों की पांच दिन की रिमांड की मांग की. इस पर कोर्ट ने पूछा कि 5 दिन क्यों? जिस पर दिल्ली पुलिस की ओर से कहा गया कि जांच को आगे ब?ना है. आरोपियों ने गुमराह करने की कोशिश है, लेकिन अब सही तथ्य पता चल रहे हैं. कोर्ट ने पांचों आरोपियों की हाजिरी लगवाई और पूछा कोई चोट तो नहीं है जवाब मिला नहीं.

पुलिस ने कोर्ट में क्या कहा?–कोर्ट में आरोपी मनोज के वकील ने कहा कि वो कार में पीछे बैठा था उसका इस घटना में कोई रोल नहीं था. पुलिस ने कोर्ट को बताया कि ये 31 दिसंबर की रात की घटना है. पीड़िता को कार से 13 किमी तक खींचा गया था. पहले दीपक ने बताया था कि वो ड्राइवर था, लेकिन वो गलत था. इस मामले में दो और आरोपियों को गिरफ्तार करना बाकी है. मतलब अब मामले में कुल 7 आरोपी हो गए हैं.

पुलिस ने बताया कि ये लोग करीब 2 घंटे तक बॉडी के साथ घूमते रहे. पेट्रोल पंप, ढाबे से सीसीटीवी फुटेज लिया गया है. पहले आरोपी झूठ बोल रहे थे पर अब नये तथ्य सामने आये हैं. मामले में 304, 120बी, 201 की धराएं जोड़ी गई हैं. कोर्ट ने पांचों आरोपियों को चार दिन की पुलिस रिमांड पर भेजा.

आरोपियों का भी एक वीडियो सामने आया–कंझावला केस में जैसे-जैसे जांच आगे बढ़ रही नए-नए खुलासे होते रहे हैं. गुरुवार को आरोपियों का भी एक सीसीटीवी वीडियो सामने आया है. इसमें पहली बार पांचों आरोपी एक साथ नजर आए. ये फुटेज 1 जनवरी सुबह 4 बजकर 33 मिनट का है. सभी आरोपी अपनी कार से उतरते हुए दिख रहे हैं.

निधि पर लगे आरोप–इसी बीच गुरुवार को पीड़िता अंजलि की दोस्त निधि पर भी आरोप लगा है. निधि के पड़ोस में रहने वाले युवक ने निधि पर धमकी देने का आरोप लगाया है. निधि के पड़ोसी का दावा है कि उसने हादसे वाले दिन सुबह निधि को देखा था. इस बात को बताने पर निधि ने उसको धमकी दी है. उसने कहा कि उसने निधि के खिलाफ पुलिस को शिकायत दी है कि उसे निधि से जान का खतरा है.

दिल्ली महिला आयोग नाखुश–इसके अलावा दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष स्वाति मालीवाल अंजलि मर्डर केस को सीबीआई को ट्रांसफर करने का सुझाव केंद्र को भेजेंगी. दिल्ली पुलिस ने आयोग के सामने हाजिरी में जो जवाब दिए हैं उससे आयोग नाखुश है.दिल्ली महिला आयोग की ओर कहा गया कि निधि का फोन अब तक जब्त नहीं किया गया है. अभी तक सारे सीसीटीवी फुटेज नहीं खंगाले गये, केस में धारा 302 नहीं लगाई गई. हादसे की रात पुलिस का रिस्पॉन्स बेहद खराब रहा. साथ ही चश्मदीद गवाहों का 164 बयान दर्ज नहीं किया गया. आयोग ने कहा कि दोषी पुलिसकर्मियों पर कार्रवाई हो और केस सीबीआई को सौंपा जाए.

स्टैंड अप कॉमेडियन कुणाल कामरा का विवादों से पुराना नाता रहा है.

फिलहाल उनके खिलाफ कोर्ट की अवमानना का मामला चल रहा है, जिसमें उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले पर सवाल उठाया था. अब इस मामले से चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़? ने खुद को अलग कर लिया है. उन्होंने इसके पीछे तर्क दिया है कि जिस विवादित टिप्पणी के लिए यह मामला दर्ज किया गया था, वह उनके ही एक फैसले पर की गई थी. इसीलिए उन्होंने बेंच से खुद को अलग कर लिया है. अब मामले की सुनवाई दूसरी बेंच करेगी. कॉमेडियन कुणाल कामरा को लगातार सत्ता पर तीखे कटाक्ष के लिए जाना जाता है.

अटॉर्नी जनरल ने उठाया था मुद्दा-बता दें कि सुप्रीम कोर्ट को लेकर कई बार अपमानजनक टिप्पणी कर चुके कामरा के खिलाफ 4 याचिकाएं लंबित हैं, जिन्हें लेकर फैसला होना बाकी है. ये मामला अर्णब गोस्वामी को जमानत देने का है. सुप्रीम कोर्ट के जमानत वाले आदेश पर कॉमेडियन कुणाल कामरा ने टिप्पणी की थी. उनकी इस टिप्पणी के बाद देश के अटॉर्नी जनरल ने ये मुद्दा सुप्रीम कोर्ट में उठाया और कहा कि कामरा ने कोर्ट का अपमान किया है. उन्होंने तर्क दिया कि इस मामले में इसलिए सजा होनी चाहिए क्योंकि लोगों को ये पता चले कि सुप्रीम कोर्ट पर बेशर्मी से हमला करने पर कोर्ट की अवमानना अधिनियम 1972 के तहत केस दर्ज किया जा सकता है. इस पूरे मामले को लेकर कुणाल कामरा की तरफ से सफाई भी सामने आई, जिसमें उन्होंने कहा कि उन्होंने जो ट्वीट किया था वो एक मजाक के तौर पर था. कुणाल कामरा ने जारी किया था बयान-इस ट्वीट के बाद अवमानना केस दर्ज किए जाने के बाद कुणाल कामरा की तरफ से बयान जारी किया गया था. जिसमें उन्होंने कहा कि वो इस मामले में कोई वकील नहीं लेंगे, साथ ही कामरा ने माफी मांगने से भी इनकार कर दिया था. उन्होंने कहा था कि उनके ट्वीट ही उनका पक्ष रखने के लिए काफी हैं.

हल्द्वानी ही नहीं, देशभर में रेलवे की इतनी जमीन पर है अतिक्रमण

हल्द्वानी में रेलवे की जमीन पर अतिक्रमण का मामला काफी सुर्खियों में है. उत्तराखंड की हाई कोर्ट की ओर से अतिक्रमण हटाए जाने के फैसले पर सुप्रीम कोर्ट ने फिलहाल के लिए रोक लगा दी है. सुप्रीम कोर्ट के फैसले से इस जमीन पर रहे लोगों को बड़ी राहत मिली है. मामले की अगली सुनवाई 7 फरवरी को होगी. यह कोई पहला मामला नहीं है जब रेलवे की जमीन पर अतिक्रमण को लेकर मामला कोर्ट में पहुंचा है.इससे पहले गुजरात और हरियाणा में भी ऐसा ही मामला सामने आया था

एमसीडी मेयर चुनाव से पहले एलजी के इन दो फैसलों ने दिल्ली में मचा दी हलचल

मेयर चुनाव से पहले उपराज्यपाल वी के सक्सेना और दिल्ली की केजरीवाल सरकार के बीच टकराव बढ़ गया है. हालिया टकराव की वजह उपराज्यपाल के दो फैसले को बताया जा रहा है.दिल्ली एमसीडी को लेकर उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने दो फैसले किए हैं. केजरीवाल सरकार उन फैसलों को असंवैधानिक और राजनीतिक फायदे के हिसाब से लिया गया फैसला करार दे रही है. दो फैसले जिनसे टकराव बढ़ा, पहले उन्हें जानते ह1. दिल्ली के उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने मेयर चुनाव के लिए बीजेपी पार्षद सत्या शर्मा को एमसीडी की पहली बैठक के लिए पीठासीन अधिकारी नियुक्त कर दिया है. केजरीवाल सरकार चाहती थी कि ये जिम्मेदारी आम आदमी पार्टी के किसी पार्षद को दी जाए. दिल्ली सरकार ने इसके लिए आम आदमी पार्टी के पार्षद मुकेश गोयल का प्रस्ताव उपराज्यपाल को भेजा था. एलजी दफ्तर से जारी नोटिफिकेशन में कहा गया है कि वार्ड संख्या 226 की पार्षद सत्या शर्मा दिल्ली एमसीडी की पहली बैठक में पीठासीन अधिकारी होंगी. वे ही बाकी पार्षदों को शपथ दिलाएंगी. और उसके बाद मेयर चुने जाने की प्रक्रिया के दौरान सत्या शर्मा ही पीठासीन अधिकारी रहेंगी. 2. दिल्ली के एलजी ने 10 लोगों को पार्षद के तौर पर मनोनीत किया था. इस बाबत 3 जनवरी को ही अधिसूचना जारी कर दी गई थी. इसको भी लेकर केंद्रीवाल सरकार और एलजी दफ्तर के बीच टकराव की स्थिति पैदा हो गई है. दिल्ली एमसीडी में मनोनीत पार्षदों को एल्डरमैन कहा जाता है. हालांकि इन्हें मेयर और डिप्टी मेयर चुनाव में वोट डालने का अधिकार नहीं होता है.आम आदमी पार्टी की शैली ओबेरॉय और बीजेपी की रेखा गुप्ता के बीच मेयर पद के लिए मुकाबला है. वहीं डिप्टी मेयर के लिए आम आदमी पार्टी के आले मोहम्मद इकबाल और बीजेपी के कमल बागरी (के बीच मुकाबला है. बहुमत तो आम आदमी पार्टी के पास है, लेकिन पीठासीन अधिकारी ही दिल्ली नगर निगम में मेयर के चुनाव के दौरान कार्यवाही का संचालन करता है. इस लिहाज से बीजेपी के पार्षद को पीठासीन अधिकारी बनाना बेहद महत्वपूर्ण है. मेयर के चुनाव के बाद मेयर पीठासीन हो जाता है और फिर उसके बाद डिप्टी मेयर और स्टैंडिंग कमेटी (स्थायी समिति) के 6 सदस्यों का चुनाव करवाता है.पीठासीन अधिकारी को नामित करने के मकसद से एमसीडी की ओर से उपराज्यपाल कार्यालय को सभी 250 पार्षदों के नाम की सूची भेजी गई थी. पीठासीन अधिकारी वहीं बन सकता है जो मेयर या डिप्टी मेयर पद की लड़ाई में उम्मीदवार नहीं हो. इसके साथ ही उसे एमसीडी की कार्यप्रणाली की अच्छी जानकारी भी हो. इस लिहाज से अनुभवी पार्षद को

पीठासीन अधिकारी (प्रोटेम स्पीकर) बनाने की परंपरा रही है. बीजेपी पार्षद सत्या शर्मा तीसरी बार पार्षद बनीं हैं. वो पूर्वी दिल्ली नगर निगम की मेयर पद की जिम्मेदारी भी निभा चुकी हैं. वहीं मुकेश गोयल 1997 से पार्षद हैं. इस बार ने छठी बार पार्षद बनें हैं. इसी को आधार बनाकर आम आदमी पार्टी एलजी के फैसले नाखुश है. आम आदमी पार्टी के विधायक सौरभ भारद्वाज ने एलजी के फैसले की निंदा करते हुए ट्विटर पर लिखा है कि सबसे सीनियर सदस्य को ही प्रोटेम स्पीकर या पीठासीन अधिकारी बनाने की परंपरा रही है. उन्होंने बीजेपी पर लोकतांत्रिक परंपराओं और संस्थाओं को बर्बाद करने का आरोप लगाया है. वहीं बीजेपी का कहना है कि सत्या शर्मा को एमसीडी कार्यप्रणाली की बेहतर समझ है क्योंकि वो पहले मेयर रह चुकी हैं और एलजी ऑफिस की ओर से कोई भी फैसला पक्षपातपूर्ण नहीं किया गया है.

एमसीडी मेयर चुनाव में वर्चस्व की लड़ाई-दिसंबर में हुए एमसीडी चुनाव में आम आदमी पार्टी ने बीजेपी के 15 साल की सत्ता को खत्म करते हुए जीत दर्ज की थी. इसके बावजूद बीजेपी के कई नेताओं ने दावा किया था कि मेयर तो बीजेपी का ही पार्षद बनेगा. बीजेपी पार्षद को पीठासीन अधिकारी बनाए जाने से आम आदमी पार्टी की चिंता बढ़ गई है. आम आदमी पार्टी का कहना है कि एलजी ऑफिस ने ओर से ये फैसला बीजेपी के इशारे पर लिया गया है.

मनोनीत पार्षदों को लेकर बढ़ा विवाद-दिल्ली नगर निगम के लिए 10 पार्षद मनोनीत करने का प्रावधान है. गृह मंत्रालय के आदेश के मुताबिक ये अधिकार दिल्ली के उपराज्यपाल के अधीन है. अनुभवी लोगों को इस पद के लिए मनोनीत किया जाता है. आम आदमी पार्टी आरोप लगा रही है कि उपराज्यपाल ने जिन 10 लोगों को पार्षद के तौर पर मनोनीत किया है, वे सभी बीजेपी के कार्यकर्ता हैं. ये मनोनीत पार्षद मेयर और डिप्टी मेयर के चुनाव में वोट नहीं डाल सकते. लेकिन वार्ड समिति के चुनाव में मनोनीत पार्षदों को वोटिंग का अधिकार दिया गया है. दिल्ली हाईकोर्ट के 27 अप्रैल 2015 के आदेश के बाद इन्हें वार्ड समिति के चुनाव में वोटिंग का अधिकार मिला हुआ है. आम आदमी पार्टी को यही डर सता रहा है कि मनोनीत पार्षद वार्ड समिति और स्थायी समिति में बीजेपी का दखल बढ़ाने में मददगार साबित होंगे. इससे एमसीडी के रोजमर्रा के कामों में बाधा पैदा हो सकती है. केजरीवाल ने एलजी को भेजी चिट्ठी- दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने एलजी विनय कुमार सक्सेना को चिट्ठी लिखी है.

आप ने इस पार्षद को बनाया सदन का नेता, मेयर चुनाव से ठीक पहले एल जी के फैसलों के बीच उठाया ये कदम

दिल्ली में शुक्रवार (6 जनवरी) को होने वाले मेयर चुनाव से पहले आम आदमी पार्टी (आप) ने अहम फैसला लिया है. आप ने मुकेश गोयल को दिल्ली नगर निगम में सदन का नेता बनाया है. वो वार्ड नंबर 15 आदर्श नगर से पार्षद हैं. मुकेश गोयल वर्तमान निगम में सबसे पुराने पार्षद हैं, वे 1997 से लगातार पार्षद हैं.

गोयल वो ही आप नेता जिनको लेकर दिल्ली के उपराज्यपाल वी. के. सक्सेना और केजरीवाल सरकार के बीच टकराव शुरू हो गया है. ऐसे में दिल्ली नगर निगम में उन्हें सदन का नेता बनाना इसी के पलटवार के तौर पर देखा जा रहा है. इस पर आप नेता सौरभ भारद्वाज ने ट्वीट कर लिखा कि ये परंपरा रही है कि सबसे सीनियर सदस्य को ही प्रोटेम स्पीकर और पीठासीन अधिकारी के तौर पर नियुक्त किया जाता है, लेकिन बीजेपी लगातार सभी लोकतांत्रिक परंपराओं और संस्थाओं को तबाह करने का काम कर रही है. दिल्ली के उपराज्यपाल वी. के. सक्सेना ने एमसीडी के मेयर के चुनाव के लिए होने वाली पहली सदन की पहली बैठक के लिए गुरुवार (5 जनवरी) को बीजेपी पार्षद सत्या शर्मा को पीठासीन अधिकारी के रूप में नामित किया. एमसीडी चुनाव के बाद बाद नगरपालिका की पहली बैठक (6 जनवरी) को होने वाली है, जिसके दौरान सभी नवनिर्वाचित पार्षद शपथ लेंगे और मेयर और उप महापौर चुने जाएंगे. एलजी ऑफिस की ओर से जारी अधिसूचना में कहा गया है, +दिल्ली के उपराज्यपाल अधिनियम की धारा 77 के तहत मेयर के चुनाव में बैठक की अध्यक्षता करने के लिए वार्ड संख्या 226 की पार्षद सत्या शर्मा को नामांकित करते हैं.+शपथ ग्रहण समारोह के बाद पार्षद नगर निगम महापौर का चुनाव करेंगे. आप ने महापौर पद के लिए शैली ओबेरॉय और आशु ठाकुर को मैदान में उतारा है. वहीं बीजेपी की ओर से मेयर के लिए रेखा गुप्ता ताल ठोक रही हैं

कश्मीर, दिल्ली-में भूकंप के झटके महसूस किए गए, अफगानिस्तान था केंद्र

दिल्ली-और जम्मू-कश्मीर में भूकंप के झटके महसूस किए गए हैं. कश्मीर घाटी में शाम करीब 7ः59 बजे भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए. रिक्टर स्केल पर इसकी तीव्रता 5.5 रही है. भूकंप का केंद्र अफगानिस्तान में रहा है. इसके साथ-साथ दिल्ली और आसपास के इलाकों में भी भूकंप के झटके महसूस किए गए. भारत, ताजिकिस्तान और अफगानिस्तान के कई हिस्सों में भूकंप के झटके महसूस किए गए हैं. वहीं पाकिस्तान के लाहौर और आसपास के इलाकों में भूकंप के जोरदार झटके महसूस किए हैं.

मुकेश अंबानी से मिले सीएम योगी आदित्यनाथ मुंबई के ताज होटल में निवेश को लेकर हुई बात

उत्तर प्रदेश में निवेश को लेकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मुंबई का दौरा किया. जहां उन्होंने बिजनेस जगत से जुड़े तमाम लोगों और हस्तियों से मुलाकात की. अब योगी आदित्यनाथ की रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन और एमडी मुकेश अंबानी से मुलाकात की तस्वीर सामने आई है. दोनों की ये मुलाकात मुंबई के मशहूर ताज होटल में हुई. इस मुलाकात के दौरान अंबानी और सीएम योगी के बीच उत्तर प्रदेश में निवेश की संभावनाओं को लेकर चर्चा हुई. मुख्यमंत्री आदित्यनाथ से मिलने ताज होटल पहुंचे मुकेश अंबानी ने उन्हें सबसे पहले फूलों का गुलदस्ता भेंट किया. इसके बाद दोनों के बीच काफी देर तक बातचीत हुई. हालांकि बातचीत को लेकर ज्यादा जानकारी फिलहाल सामने नहीं आई है. **बिजनेस जगत के दिग्गजों को**

किया संबोधित-मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इससे पहले बिजनेस जगत के दिग्गजों को संबोधित किया. जिसमें उन्होंने कहा कि प्रदेश में मजबूत कानून-व्यवस्था है इसलिए डरने की कोई बात नहीं है. उन्होंने कहा कि प्रदेश भू-माफियाओं से मुक्त हो चुका है. योगी ने कहा, ''आपने देखा होगा कि 2017 से पहले यहां हर दूसरे दिन दंगे होते थे. अब राज्य में कानून-व्यवस्था बहुत मजबूत है. हमने भू-माफिया रोधी कार्यबल का गठन किया है और उनके कब्जे से 64,000 हेक्टेयर भूमि मुक्त कराई है.''

उत्तर प्रदेश वैश्विक निवेशक सम्मेलन 2023 का प्रचार-मुख्यमंत्री ने निवेशकों से कहा कि आज उत्तर प्रदेश में कोई भी 'गुंडा' किसी कारोबारी या ठेकेदार से वसूली नहीं कर सकता है और न ही उन्हें परेशान कर सकता है. उन्होंने कहा, यहां तक कि राजनीतिक चंदा भी जबर्दस्ती नहीं लिया जा सकता. लखनऊ में 10-12 फरवरी को होने जा रहे तीन दिन के उत्तर प्रदेश वैश्विक निवेशक सम्मेलन 2023 का प्रचार करने के लिए मुख्यमंत्री आठ दिन तक रोड शो करेंगे. योगी ने कहा, ''हमारे दल 16 देशों और 21 शहरों में गए जहां निवेशकों को निवेशक सम्मेलन में आने के लिए आमंत्रित किया. हमें राज्य के लिए अब तक 7.12 लाख करोड़ रुपये के निवेश के आशय पत्र मिल चुके हैं.'

भारत जोड़ो यात्रा खत्म कर दिल्ली लौटे राहुल गांधी अस्पताल में भर्ती मां सोनिया गांधी से करेंगे मुलाकात

कांग्रेस सांसद सोनिया गांधी को बुधवार (4 जनवरी) को दिल्ली के गंगाराम अस्पताल में भर्ती करवाया गया था. उनकी बेटी प्रियंका गांधी वाड्रा भी उनके साथ अस्पताल गई थीं. अब गुरुवार (5 जनवरी) को भारत जोड़ो यात्रा के बाद राहुल गांधी अपनी मां सोनिया गांधी को देखने दिल्ली लौट आए हैं. कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी को वायरल श्वसन संक्रमण के कारण अस्पताल में भर्ती कराया गया था.अस्पताल के प्रबंधन बोर्ड के प्रमुख डॉक्टर अजय स्वरूप ने बुधवार को एक बयान में कहा था, +सोनिया गांधी जी को हमारे अस्पताल में आज भर्ती कराया गया. वह 'चेस्ट मेडिसिन' विभाग में डॉक्टर अरूप बसु और उनकी टीम की निगरानी में भर्ती हैं.+ उन्होंने बताया कि सोनिया गांधी के वायरल श्वसन संक्रमण का उपचार किया जा रहा है. **मंगलवार शाम को भी दिल्ली लौट आए थे राहुल**-सोनिया

गांधी की तबीयत मंगलवार से खराब थी जिस कारण राहुल गांधी और प्रियंका गांधी उत्तर प्रदेश में 'भारत जोड़ो यात्रा' के प्रवेश करने पर सात किलोमीटर चलने के बाद मंगलवार शाम दिल्ली लौट आए थे. गुरुवार को ये यात्रा शामली (उत्तर प्रदेश) के ऐलम गांव में रात्रि विश्राम के बाद राहुल गांधी की अगुवाई में सुबह छह बजे फिर शुरू हुई थी.

प्रियंका गांधी भी यात्रा में नहीं हो पाईं शामिल-पार्टी की उत्तर प्रदेश से जुड़े मामलों की प्रभारी प्रियंका गांधी वाड्रा गुरुवार को भी यात्रा में शामिल नहीं हो पाईं. कांग्रेस के प्रदेश प्रवक्ता अंशु अवस्थी ने बताया था कि पार्टी की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी की तबीयत खराब होने के चलते उनकी देखभाल में व्यस्त प्रियंका गांधी बुधवार को भी यात्रा में हिस्सा नहीं ले सकीं थीं और गुरुवार को भी नहीं आ पाईं. यात्रा ऐलम गांव से शुरू होकर ऊंचागांव पहुंची थी. जिसके बाद राहुल गांधी वापस दिल्ली लौट गए.

ग्वालियर के गौरव को बढ़ाएगा यह शौर्य स्मारक ऊर्जा मंत्री

नवनिर्मित कारगिल युद्ध शौर्य स्मारक के सुंदरीकरण कार्य का प्रदेश के ऊर्जा मंत्री द्वारा लगभग 25 लाख रुपया

लागत के विकास कार्यों का भूमि पूजन किया गया पंडित सूरज दुबे ने मंत्रोचार कर विधिवत स्थल पर विकास कार्यों का भूमि पूजन कराया इस अवसर पर माननीय ऊर्जा मंत्री ने बड़ी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा की 15 ग्वालियर विधानसभा जिसका में प्रतिनिधित्व करता हूं ऐसे स्थल का बनकर तैयार हो जाना बड़े गौरव की बात है यह स्थल पूरे देश में तीसरा युद्ध स्मारक बनकर तैयार है जो कि हमें कारगिल की विजय एवं उन 527 अमर शहीदों का स्मरण करायेगा जिन्होंने राष्ट्रप्रेम रक्षा त्याग और बलिदान का गौरवशाली इतिहास लिखा यह ऐतिहासिक स्थल आने वाले समय में सहादत के मंदिर के रूप में पूजा जाएगा एवं प्रदेश एवं देश में ग्वालियर का मान बढ़ाएंगा इसअवसर पर संस्था के सचिव विह्ल सेंगर ,राजकुमार परमार,प्रयाग तोमरमंडल अध्यक्ष, राष्ट्रीय कवि रविंद्र रवि पार्षद मंजू सोनू राजपूत मोहन व्हिटेकर शुभम कुशवाह लाल सिंह पाल राजू यादव अभिषेक शर्मा शिवम सिंह गौर संजय शर्मा मनोज त्रिपाठी पप्पू जादोन्र,अंशुमान सेंगर,अनिल तोमर,असलमखान,सलिलखेमरिया ,गिरिराज धाकडकवित भारद्वाज ,भरत गुर्जर,राघवेंद्र विसेन गीता सिकरवार अरविंद मोहन जितेंद्र परिहार राजेश तोमर आदि ब?ी संख्या में कार्यकर्ता एवं क्षेत्रीय नागरिक बन्धु उपस्थित थे।

ओवर ब्रिज बनने के बाद भी मुरैना को नहीं मिली जाम से निजात

ई रिक्शा ने बिगाड़े हालात

मुरैना का ट्रैफिक हमेशा से आम लोगों की समझ से बाहर रहा है लेकिन रोड चौड़ीकरण हाइवे निर्माण और अब ओवर ब्रिज का निर्माण हो जाने के बाद लगा था कि अब ट्रैफिक सुगम हो जायेगा लेकिन स्थिति जस की तस बनी हुई है आज स्थिति यह है कि लोगों पर दुपहिया और चार पहिया वाहनों की संख्यातो बढ़ी है लेकिन ट्रैफिक की समझ उस गति से विकसित नहीं हुई है लोगों में संपन्नता बढ़ती जा रही है उसी हिसाब से लोग दोपहिया और चार पहिया वाहनों का इस्तेमाल भी अत्यधिक मात्रा में चलन में लाते जा रहे हैं बेरियर चौराहा के जाम के लिए मुरैना में ई-रिक्शा भी इसकी बहुत बड़ी वजह है बाजार के लिए बेरियर चौराहे से जाने के लिए मुख्य मार्ग का इस्तेमाल ही किया जाता है जिससे ट्रैफिक का दबाव बढ़ता है इतने सालों में मुरैना नगर निगम हनुमान चौराहा स्टेशन तक जाने के लिए एमएस रोड के अलावा अन्य किसी रोड का इस्तेमाल सुचारू ढंग से नहीं करा पाया और ई-रिक्शा दो पहिया वाहन चार पहिया वाहन सभी एमएस रोड का इस्तेमाल करने की वजह से इस रोड पर जाम की समस्या बन जाती है मुरैना के लोगों में ट्रैफिक नियमों की भी समझ कम ही है कई बार लोग सड़क पर अपना दो पहिया वाहन खड़ा करके सामान खरीदना लगते हैं कभी सड़क पर बाहर खड़ा करके मोबाइल से बात करना शुरू कर देते हैं इससे जाम की समस्या उत्पन्न हो जाती है इससे निजात कब मिलेगी यह भविष्य के गर्त में है

इनका कहना है

इंदौर में 9 जनवरी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और 10 जनवरी को राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू जी के आगमन में मुरैना से 25 ट्रैफिक विभाग के कर्मचारी इंदौर गए हुए हैं इस वजह से मुरैना में विभिन्न जगहों पर लगने वाले ट्रैफिक कर्मियों की कमी है इंदौर से ट्रैफिक कर्मी आ जाने के बाद समस्या मैं सुधार होगा ए के सिंहसूवेदार ट्रैफिक थानामुरैना

अगर 15 तारीख को हमारे हक में फैसला नहीं हुआ तो उग्र आंदोलन होगा राहुल जैन

झारखंड सरकार द्वारा सम्मेद शिखर को पर्यटन स्थल घोषित करने के विरोध में मालनपुर जैन समाज भूख हड़ताल पर बैठे

भिण्ड। सम्मेद शिखर को पर्यटन स्थल घोषित करने के विरोध में समस्त जैन समाज मालनपुर की 1008 महावीर दिगंबर जैन मंदिर के सामने 24 घंटे के लिए महिला बच्चियां पुरुष जल त्याग एवं भूख हड़ताल पर बैठे झारखंड सरकार द्वारा

सम्मेद शिखर को पर्यटन स्थल घोषित किए जाने के विरोध में मालनपुर नगर परिषद क्षेत्र के समस्त जैन समाज जिसमें बच्चियां पुरुष महिलाएं 24 घंटे के लिए अन्न जल त्याग कर 1008 महावीर दिगंबर जैन मंदिर ग्वालियर इटावा राष्ट्रीय राजमार्ग के सामने भूख हड़ताल पर बैठे इसमें मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष राहुल जैन अपने उद्बोधन में कहा कि जैन समाज ने कभी किसी भी अपने हक लड़ाई के लिए सरकारों से शासन से कभी कुछ नहीं मांगा ना आंदोलनों में रैलियां निकाली ही परंतु हमारे समाज जैन समुदाय के तीर्थ स्थल को खंडित करने की जो मंशा की जा रही है उसे बर्दाश्त नहीं करेंगे भारत वर्ष में जैन इतना समुदाय हैं जिसने भारत सरकार से लेकर प्रदेश सरकारों को टैक्स के रूप में जी एस टी से लेकर जी डी पी रेंज सबसे ज्यादा देने वाला अगर कोई समाज है तो वह जैन समाज भारत सरकार ने भी अगर नजर अंदाज किया तो वह दिन दूर नहीं 15 जनवरी के बाद देश का जैन समाज सड़कों पर उतरेगा हम सब यही मांग कर रहे हैं कि सम्मेद शिखर को तीर्थ स्थल की जगह पर्यटन स्थल नहीं बनाया जाए उससे हमारे धार्मिक स्थान पर आहत पहुंचेगी हमारा जैन समाज ने कभी भी रोजगार नहीं मांगा महंगाई के विरोध में नहीं यह कोई प्रदर्शन किसी भी टैक्स का विरोध नहीं किया देश में सबसे ज्यादा टैक्स देने वाला जैन समाज है अगर देश में समय रहते हुए हमारे मांग नहीं मानी तो वह दिन दूर नहीं जब हम अपने बच्चों सहित सड़क पर उतर कर हम अपने धर्म के प्रति जान भी देने को तैयार है हमारे हक में निर्णय नहीं होता है तो 15 जनवरी तक राज्य शासन झारखंड के आश्वासन दिया गया है हमारी मांगों को लेकर परंतु अशानूकुल निर्णय नहीं हुआ तो 16 जनवरी से हम सब जैन समाज इसका विरोध करेंगे अभी तक हमारे द्वारा मालनपुर से भूख हड़ताल प्रारंभ किया है इसमें आज प्रातः काल से धरने पर दिगंबर जैन मंदिर 1008 महावीर स्वामी जैन मंदिर के सामने इस सर्दी में जो कि पारा 4 डिग्री मैं बैठे हुए हैं बैठने वालों में पूर्व मंदिर कमेटी अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद जैन, शांता कुमार जैन, प्रदीप जैन, (गोरमी) वाले अनू जैन, महिलाओं में सुनीता जैन, बबली जैन, भारती जैन, कौशल जैन, बच्चियों में आसू जैन कुमारी, प्रियांशी जैन कुमारी, कोशिश, जैन प्रमुख एवं मालनपुर समस्त जैन समाज धरना प्रदर्शन का सहयोग दे रहा है।

शिवपुरी झांसी रोड हाईवे 27 पर ट्रकों की आपस में टकराने से वीभत्स हादसा घटित

मिनी ट्रक के ड्राइवर एवं क्लीनर की जलने से मौके पर ही दर्दनाक मौत

करैरा तहसील अंतर्गत आने वाला ग्राम काली पहाड़ी जो कि शिवपुरी झांसी रोड हाईवे 27

पर बसा हुआ है इसी ग्राम के नजदीक कल दरमियानी रात करीब 12ः00 बजे की समय घने कोहरे में चल रहे ट्रकों के आपस में टकराने से यह बड़ा हादसा घटित हुआ है जब सुबह मौके जाकर दैनिक प्रदेश समय के संवाददाता ने जानकारी ली तो बताया गया कि झांसी से शिवपुरी की ओर एक कंटेनर जिसका गाड़ी नंबर यूपी 78 एफटी 7128 घने कोहरे में तेज गति से ट्रक चलाता हुआ चला रहा था और इस ट्रक वाले ने अचानक आगे चल रहे ट्रक में टक्कर मार दी और टक्कर इतनी जबर्दस्त हुई की कंटेनर सीधी अवस्था में डिवाइडर पर जा खड़ा हुआ और कहीं ना कहीं यह ट्रक आधा डिवाइडर पर एवं आधा शिवपुरी झांसी रोड पर खड़ा रह गया और इस ट्रक के ड्राइवर एवं क्लींजर मौके से रफूचक्कर हो गए अचानक पीछे से आ रही तेज रफ्तार झांसी से गुजरात जा रही मिनी ट्रक एमपी 07 जीए 7616 के ड्राइवर तीव्र गति से चलाते हुए चला आ रहा था और इस कंटेनर में जबरदस्त टक्कर मार दी टक्कर इतनी जबरदस्त हुई की मिनी ट्रक की वायरिंग में आग लग गई जिसमें मिनी ट्रक एमपी 07 जीए 7616 के ड्राइवर भोला बराहर निवासी जोरासी जिला गवालियर एवं क्लीनर रामकिशन बराहर निवासी परबई की मौके पर गाड़ी में आग लगने से दर्दनाक मौत हो गई इस घटना की जानकारी थनरा हाईवे चौकी प्रभारी सतीश जयंत को मालूम हुई वह तत्काल पुलिस फोर्स को लेकर घटनास्थल पर रवाना हुए और मौके पर करैरा संबंधित अधिकारियों को फोन लगाया और और फायर बिग्रेड को बुलाकर आग पर काबू कर मृतक शवों को निकालकर करैरा पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया गया और और कहीं ना कहीं क्रेन को बुलाकर डिवाइडर पर खड़े ट्रकों को हटाने की एवं मिनी ट्रक को हटाने की कार्यवाही जारी की गई गनीमत यह समझो की मिनी ट्रक जो झांसी से गुजरात ब्लास्टिंग से संबंधित विस्फोटक पदार्थ लेकर जा रहा था कहीं ना कहीं आग की लपटें बॉडी में थोड़ी सी भी जगह मिलने के कारण विस्फोटक पदार्थ में आग प्रवेश कर जाती तो हाईवे पर इसके अलावा और भी बड़े हादसे घटित हो सकते थे

फ्री नेट देश की सुरक्षा के साथ खिलवाड.घनश्याम चंद्रवंशी

कालापीपल के बेहरावल मैं रेड रोज स्कूल में अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत के सह क्षेत्रीय संगठन मंत्री घनश्याम चंद्रवंशी (भोपाल) ने समाज मे हो रहे साइबर क्राइम पर विषय रखा, उन्होंने बच्चों को कार्यक्रम के दौरान बताई,उन्होंने विशेषकर बच्चियों के लिए कहा कि बच्चियां इंस्टाग्राम फेसबुक व्हाट्सएप इस्तेमाल करते समय विशेष ध्यान दें,किसी भी प्रकार की अपनी निजी जानकारी अन्य व्यक्ति को ना मिल भाई इसका ध्यान रखें कोई भी अंजान लिंक को ओपन नही करे जिससे आपके निजी जानकारी उनके पास ना पहुचे ओर आपकी अर्थिक हानी ना हो पाये हम ?ी के चक्कर मे किसी के भी झासे मे ना आये कोई भी अंजान एप को डाउनलोड ना करे,फ्री नेट देश की सुरक्षा के साथ खिलवा? है कृपया इससे बचें,उन्होंने कहा कि अगर किसी के आर्थिक साइबर अपराध होता है और उनके खाते से गलत तरीके से कोई पैसा निकाल लेता है तो उसकी शिकायत केंद्र सरकार द्वारा जारी 1930 तत्काल करना चाहिए। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य राकेश पाटीदार,जितेंद्र पाटीदार के साथ-साथ सभी शिक्षण गण कार्यक्रम में उपस्थित रहे ।

समूचा भिंड जिला भीषण सर्दी की चपेट में तापमान 3 डिग्री सेल्सियस पर पहुंचा

भिण्ड। इस समय समूचा भिंड जिला भीषण सर्दी की चपेट में है। भिंड जिले का तापमान 3 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया है। पिछले चार पांच दिन से चल रही सर्द हवाओं ने हर उम्र दराज के लोगों को कड़ाके की सर्दी का एहसास करा दिया है। भीषण सर्दी के चलते भिंड जिले में जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया है। भिंड जिले में तापमान लगातार नीचे खिसकता जा रहा है। बीते गुरूवार को कड़ाके की सर्दी के दौरान जब लोगों ने गूगल पर सर्च कर भिंड जिले का तापमान देखा तो भिंड जिले का तापमान 4 डिग्री सेल्सियस पर था। अत्याधिक सर्दी के चलते लोग घरों में दुबकने के लिए मजबूर हो गये हैं। जिले के अधिकांश बाजारों में सन्नाटा पसरा नजर आ रहा है। केवल जरूरतमंद लोग ही बाजारों में सौदा सामग्री खरीदने के लिए पहुंच रहे हैं। स्थिति यह उत्पन्न हो गई हैं। कि लोग दिनभर गर्म कपड़े धारण किए आग का सहारा लेकर सर्दी से बचाव करने की कोशिश में लगे दिखाई देते हैं। जिले में कई जगह फिलहाल कोहरे का असर तो कम है। लेकिन बर्फीली हवाओं एवं धूप बारह बजे के बाद निकलने से सर्दी चरम सीमा पर पहुंच गई है।

बच्चें-बुजुर्ग एवं गौ वंश ठंड से सबसे अधिक प्रभावित-भिंड सहित अंचल में पड़ रही कड़ाके की सर्दी का सर्वाधिक असर बच्चों और बुजुंगों पर पड़ रहा है। सर्दी के चलते बच्चें एवं बुर्जुग सर्दी, जुकाम, खांसी से पीड़ित है। यदि भिंड शहर और ग्रामीण अंचल के सरकारी एवं प्राइवेट चिकित्सालयों में देखा जाये तो अनेक बच्चें एवं बुर्जुग इन मौसमी बीमारियों का उपचार कराते दिखाई देगें। तो वही सड़कों पर घूमने फिरने बाली बेसहारा गायों का बहुत बुरा हाल है। सड़कों पर आवारा रूप से विचरण करने बाले सैकड़ों गौवंश इस जबरदस्त सर्दी में थरथर कांपते फिर रहे है। उन्हें जहाँ आग जलती हुई दिखाई देती है। तो वह ठंड से बचने के लिए आग के आसपास खड़ी हो जाती है। अंचल में गौशाला के अभाव में अनेक बेसहारा गाय सर्दी की चपेट में आकर बे मौत मर रही है। लेकिन प्रशासनिक अधिकारी इस ओर बिलकुल भी ध्यान नहीं दे रहे हैं। अत्यधिक सर्दी से वह किसान भी सबसे ज्यादा परेशान है। जिन्हें रात्रि के समय खुले आसमान के नीचे रहकर आवारा पशुओं से फसल की रखवाली करना पड़ रही है। सर्दी का सितम जारी और सुबह संचालित हो रहे कोचिंग सेन्टरसमूचे चंबल संभाग में सर्दी का सितम जारी है। भीषण सर्दी को देखते हुए जिला प्रशासन भिंड ने प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में पढने बाले बच्चों का सात जनवरी तक अवकाश घोषित कर दिया है। लेकिन भिंड जिले के कई नगरीय क्षेत्रों में आज भी प्रातः पांच बजे से कोचिंग सेन्टर संचालित हो रहे है।

नगर परिषद पानखेड़ी में भूमि पूजन व पट्टा वितरण कार्यक्रम संपन्न

मेरी एक शर्त है कि काम इमानदारी से करना पैसे की कमी नहीं आएगी राज्य स्कूल शिक्षा मंत्री इंदर सिंह परमार

कालापीपल-नगर परिषद पानखेड़ी ने 5 जनवरी को परिषद गठन गौरव दिवस मनाया गया। उक्त गौरव दिवस का आयोजन 5,6 एवं 7 जनवरी तक आयोजित किया जाएगा।प्रथम दिवस में राज्य शिक्षा मंत्री इंदर सिंह परमार जिला अध्यक्ष भाजपा अशोक नायक मंडल अध्यक्ष सुरेश परमार विधायक कुणाल चौधरी की उपस्थित रहे। वही सर्वप्रथम दीप प्रज्वलित कर सरस्वती पूजा व कन्या पूजन से की गई साथ में मध्य प्रदेश गान का कार्यक्रम भी हुआ व अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट किए गए,साथ ही नगर गौरव दिवस के उपलक्ष्य में निकाय के नवीन कार्यालय भवन का भूमि पूजन जिसकी लागत एक करोड़ 15 लाख तथा नगरी क्षेत्र में 183 इकाइयों को पट्टा वितरण किया गया।उक्त कार्यक्रम में नगर परिषद के अध्यक्ष जय प्रकाश अग्रवाल,उपाध्यक्ष भगवत सिंह मेवाडा पार्षद दिनेश शर्मा,अखिलेश परमार,श्रीमति अनीता राजपूत,विकास यादव,नंदकिशोर सोनी,यामिनी सोनी,श्रीमती संतोष पंवार,श्रीमती श्रद्धा शिवपुरिया,श्रीमती शिवानी पंवार,श्रीमती सारिका नेमा,राजेश मालवीय समस्त पार्षद गण व नगर के

गणमान्य नागरिक पत्रकार गण आदि उपस्थित रहे।अध्यक्ष जयप्रकाश अग्रवाल द्वारा नगर के विकास को लेकर उद्बोधन प्रस्तुत किया।वह आगामी कार्य योजना से उपस्थित जनों को अवगत कराया वही पर अध्यक्ष द्वारा मंत्री जी के समक्ष एस.डी.आर.एफ योजना हेतु राशी रुपए एक करोड़ तथा अन्य अधोसंरचना विकास कार्य हेतु राशी रुपए 50 लाख की मांग की गई।मंत्री जी द्वारा उक्त मांगों को स्वीकार करते हुए शीघ्र ही राशि नगर परिषद को उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया।साथ ही क्षेत्रीय विधायक कुणाल चौधरी ने नगर परिषद पानखेड़ी में चार लाख रुपए की टीन सेट की स्वीकृति दी।वही कार्यक्रम के दौरान श्री परमार ने नगर परिषद को दो टूक शब्दों में चेतावनी दी कि काम इमानदारी से करना परिषद को पैसे की कमी नहीं आएगी।कार्यक्रम में नगर परिषद का समस्त स्टाफ मौजूद रहे उक्त कार्यक्रम का संचालन भगवत सिंह राजपूत द्वारा किया एवं नगर परिषद सीएमओ प्रवीण गंगवाल ने उपस्थित जनप्रतिनिधि व जनता को विश्वास दिलाया कि परिषद हमेशा ही ईमानदारी से काम करती है व करती रहेगी।वही कार्यक्रम में पधारे जनप्रतिनिधि व जनता का आभार व्यक्त किया।

अगर 15 तारीख को हमारे हक में फैसला नहीं हुआ तो उग्र आंदोलन होगा राहुल जैन

झारखंड सरकार द्वारा सम्मेद शिखर को पर्यटन स्थल घोषित करने के विरोध में मालनपुर जैन भूख हड़ताल पर बैठे

पुष्पांजलि टुडे संवाददाता मालनपुर पहलवान सिंह राजावत

मालनपुर /सम्मेद शिखर को पर्यटन स्थल घोषित करने के विरोध में समस्त जैन समाज मालनपुर की 1008 महावीर दिगंबर जैन मंदिर के सामने 24 घंटे के लिए महिला बच्चियां पुरुष जल त्याग एवं भूख हड़ताल पर बैठे झारखंड सरकार द्वारा सम्मेद शिखर को पर्यटन स्थल घोषित किए जाने के विरोध में मालनपुर नगर परिषद क्षेत्र के समस्त जैन समाज जिसमें बच्चियां पुरुष महिलाएं 24 घंटे के लिए अन्न जल त्याग कर 1008 महावीर दिगंबर जैन मंदिर ग्वालियर इटावा राष्ट्रीय राजमार्ग के सामने भूख हड़ताल पर बैठे इसमें मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष राहुल जैन अपने उद्बोधन में कहा कि जैन समाज ने कभी किसी भी अपने हक लड़ाई के लिए सरकारों से शासन से कभी कुछ नहीं मांगा ना आंदोलनों में रैलियां निकाली ही परंतु हमारे समाज जैन समुदाय के तीर्थ स्थल को खंडित करने की जो मंशा की जा रही है उसे बर्दाश्त नहीं करेंगे भारत वर्ष में जैन इतना समुदाय है जिसने भारत सरकार से लेकर प्रदेश सरकारों को टैक्स के रूप में जी एस टी से लेकर जी डी पी रेंज सबसे ज्यादा देने वाला अगर कोई समाज है तो वह जैन समाज भारत सरकार

ने भी अगर नजर अंदाज किया तो वह दिन दूर नहीं 15 जनवरी के बाद देश का जैन समाज सड़कों पर उतरेगा हम सब यही मांग कर रहे है कि सम्मेद शिखर को तीर्थ स्थल की जगह पर्यटन स्थल नहीं बनाया जाए उससे हमारे धार्मिक स्थान पर आहत पहुंचेगी हमारा जैन समाज ने कभी भी रोजगार नहीं मांगा महंगाई के विरोध में नहीं यह कोई प्रदर्शन किसी भी टैक्स का विरोध नहीं किया देश में सबसे ज्यादा टैक्स देने वाला जैन समाज है अगर देश में समय रहते हुए हमारे मांग नहीं मानी तो वह दिन दूर नहीं जब हम अपने बच्चों सहित सड़क पर उतर कर हम अपने धर्म के प्रति जान भी देने को तैयार है हमारे हक में निर्णय नहीं होता है तो 15 जनवरी तक राज्य शासन झारखंड के आश्वासन दिया गया है हमारी मांगों को लेकर परंतु अशानुकूल निर्णय नहीं हुआ तो 16 जनवरी से हम सब जैन समाज इसका विरोध करेंगे अभी तक हमारे द्वारा मालनपुर से भूख हड़ताल प्रारंभ किया है इसमें आज प्रातः काल से धरने पर दिगंबर जैन मंदिर 1008 महावीर स्वामी जैन मंदिर के सामने इस सर्दी में जो कि पारा 4 डिग्री में बैठे हुए हैं बैठने वालों में पूर्व मंदिर कमेटी अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद जैन, पहलाद जैन, शांता कुमार जैन, प्रदीप जैन, (गोरमी) वाले अनू जैन, महिलाओं में सुनीता जैन, बबली जैन, भारती जैन, कौशल जैन, बच्चियों में आसू जैन कुमारी, प्रियांशी जैन कुमारी, कोशिश, जैन प्रमुख एवं मालनपुर समस्त जैन समाज धरना प्रदर्शन का सहयोग दे रहा है

राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन 11 फरवरी को

ब्यूरो सोनू कुमार माथुर

एटा (सू0वि0) राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण एवं उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देशानुसार एवं माननीय जनपद न्यायाधीश /अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, एटा के आदेशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, एटा के तत्वाधान में दिनांक 11-02-2023 दिन शनिवार को राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाना सुनिश्चित हुआ है। इस राष्ट्रीय लोक अदालत में मोटर दुर्घटना प्रतिकार वाद, दाण्डिक वाद, धारा 138 एन0आई0 एक्ट, बैंक रिकवरी वाद, श्रमिक वाद, जल एवं गृहकर वाद, विद्युत बिल वाद, वैवाहिक वाद, भूमि-अधिग्रहण वाद, दीवानी वाद, राजस्व वादों के साथ-साथ ई-चालानों से संबंधिक वादों का भी निस्तारण सुलह-समझौते एवं संस्वीकृत के आधार पर किया जायेगा। अतः जिला विधिक सेवा प्राधिकरण एटा के तत्वाधान में दिनांक 11-02-2023 दिन शनिवार को आयोजित होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत में अपने-अपने वादों को चिन्हित करवाते हुए अधिकारिक वादों / मामलों को नियत एवं निस्तारित करायें।

दबोह में एक शाम खाटू बाबा के नाम,07 को सजेगा बाबा का दरबार

ग्वालियर से आये कलाकार देंगे बाबा श्याम के भजनों की मनमोहक प्रस्तुति

अर्पित गुप्ता उपसम्पादक पुष्पांजली टुडे

दबोह- दबोह नगर में हारे के सहारे खाटू श्याम बाबा का दरबार 07 जनवरी 2022 को नगर के गल्ला मंडी प्रांगण में सजने जा रहा है।जिसके लिए कार्यक्रम प्रांगण में विधिविधान से भूमिपूजन हुआ।कार्यक्रम में ग्वालियर से आये कलाकार बाबा के भजनों की मनमोहक प्रस्तुत देंगे।कार्यक्रम में योगेश जी महाराज(लहार/ग्वालियर),भजन गायिका भांवना भदौरिया(ग्वालियर),ज्योति पाल(मोहना),दिव्यांश बालाजी(ग्वालियर,श्रध्दा टीवी फैम) बाबा के भजनों की प्रस्तुति देंगे।वहीं बाबा की दरबार सेवा राजेन्द्र गौ? जी(ग्वालियर)करेंगे व सुरसाज राजीव म्यूजिकल ग्रुप ग्रुप के द्वारा दिया जाएगा।वहीं कार्यक्रम का लाइव प्रसारण श्याम प्रेमी द हिन्द टुडे न्यूज के यूट्यूब चैनल के माध्यम से देख सकेंगे।कार्यक्रम का शुभारंभ ठीक 06 बजे गल्ला मंडी प्रांगण दबोह में किया जाएगा।वहीं उससे पहले दोपहर 12 बजे नगर के छीन्नमस्ता देवी

मंदिर से बाबा की निशान यात्रा भी निकाली जायेगी जो कि मुख्य बाजार होते हुए कार्यक्रम स्थल गल्ला मंडी में समापन होगी।इस विशाल कार्यक्रम के लिए श्री श्याम परिवार मित्र मंडल दबोह के सदस्यों ने सभी धर्मप्रेमी बन्धुओ व हारे के सहारे बाबा श्याम के भक्तों से अनुरोध किया है कि कार्यक्रम में ज्यादा से ज्यादा संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाये।

मदद कब तक करते रहोगे सबसे बड़ा सवाल

पुष्पांजली टुडे

ग्वालियर। ऐसा कई बार देखा जाता है की बहुत सारी समाजसेवी संस्थाएं गरीबों की मदद करती रहती हैं मदद करना गलत नहीं है करना भी चाहिए लेकिन अब सवाल उठता है मदद कब तक करते रहेंगे इसलिए संस्थाओं को सोचना चाहिए कि मदद टेंपरेरी हो सकती है लेकिन इसको रोजगार , स्वरोजगार में कैसे बदला जाए उस पर कार्य करें तभी हम एक अच्छे समाजसेवी के रूप में जाने जाएंगे अन्यथा आप जिसको भी खाना ,,कपड़ा देकर के मदद कर रहे हैं उसमें कोई भी सुधार नहीं होगा वह जहां पर है वही पर रहेगा क्योंकि मैंने संगठन के द्वारा दो तीन लोगों को पैसे की बजाय स्वरोजगार के रूप में मदद की है इसलिए मुझे लगता है कि रोजगार या रोजगार स्वरोजगार पर प्रत्येक समाजसेवी संस्था को फोकस करना चाहिए ! अगर हमें ऐसा कर पाने में सफल होते हैं तो जो हम गरीबी का रोना रोते रहते हैं उस पर कहीं ना कहीं हम कंट्रोल पा सकते हैंसमाजसेवी अरुणेश सिंह भदोरिया राष्ट्रीय अध्यक्ष जनशक्ति वेलफेयर सोसाइटी

कैलारस- जनपद पंचायत अंतर्गत पंच पद हेतु सभी पंचायतों में शांति पूर्ण हुआ मतदान

गौरव शर्मा पुष्पांजलि टुडे

कैलारस- रिटर्निंग ऑफिसर भरत कुमार ने बताया की कैलारस जनपद पंचायत के अंतर्गत 16 पंचायतो के 35 वार्ड के लिये 23 मतदान केंद बनाए गए है जिसमें 71 पंच पद हेतु प्रत्याशी का चुनाब सभी पंचायतों में शांतिपूर्ण हुआ शांतिपूर्ण मतदान कराने के लिए कैलारस ब्लॉक के सभी प्रशासनिक अधिकारी सुबह से मतदान के लिए बनाई गई पोलिंग बूथ पर लगातार भ्रमण कर रहे थे जिससे कि कहीं कोई किसी प्रकार की समस्या ना हो शांतिपूर्ण चुनाव कराने के लिए कराने के लिए 6 सेक्टर मजिस्ट्रेट एव 2 रिजर्व सेक्टर आफिसर एव बीइओ, बीआरसी एव पुलिस की टीम लगातार मतदान केंद्र पर भ्रमण कर रही थी एसडीओपी संजय कोच्छा एव थाना प्रभारी वेदेन्द्र कुशवाह ने बताया कि पंच पद चुनाब हेतु हमने एक दिन पूर्व ही चुनाब तैयारी पूर्ण कर ली है चुनाब के दिन प्रत्येक पोलिंग बूथ पर हमारा पुलिस स्टाफ मौजूद रहा एवं लगातार प्रत्येक पंचायत में पुलिस पार्टियां भ्रमण करती रही जिससे कि किसी भी पोलिंग बूथ पर पंच पद हेतु प्रत्याशियों के चुनाव में कहीं कोई समस्या नही हुई बही उन्होनें बतया की पंच पद चुनाब बाली सभी पोलिंग बूथों पर ग्रामीणों का भरपूर सहयोग रहा सभी ने अपनी अपनी पंचयात में शांति पूर्ण मतदान किया बही उन्होंने उपस्थित ग्रामीणों से कहा कि आप सभी का पंच पद हेतु चुनाब में पुलिस का सयोग करने के धन्यवाद दिया बही इसी प्रकार आप सभी लोग अपराधों पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस का सहयोग करें जिससे कि ग्रामीण क्षेत्रों में अपराध कम हो सके

करुणागिरी समिति ने जरूरतमंद को प्रदाय की सहायता राशि

रितेश कटरे ब्युरो चीफ पुष्पांजलि टुडे बालाघाट

वर्तमान समय में सामाजिक संगठनों के द्वारा जरूरतमंद लोगों की सहायता बढ़चढ़ कर की जा रही है। इसी कड़ी में करुणागिरी समिति कलपाथरी के द्वारा क्षेत्र की ग्राम पौंडी में निवासरत महिला हेमलता बोरकर को करूणागिरी समिति के सदस्य इश्वर बंसोड़ एवं टीम के द्वारा उनके निवास पर पंहुचकर 4730 रुपए की अनुग्रह सहायता राशि प्रदाय की गई। ज्ञात हो कि उक्त महिला के 2 बच्चे हैं, और पढ़ाई को लेकर काफी चिन्तित थी, इस बात की जानकारी लगते ही संगठन के द्वारा महिला को सहयोग किया गया जिससे की वो अपने दोनो बच्चो का दाखिला स्कूल में करवा सके।हेमलता बोरकर के पति का 10 वर्ष पूर्व निधन हो गया है।परिवार बहुत ही गरीब स्थिति में जीवन व्यापन कर रहा है। इस सहायता के लिए महिला ने संगठन का धन्यवाद किया है।

मकरसंक्रांति पर्व पर सर्व सन्त पंथ आध्यात्मिक भक्तिमय सत्संग ज्ञानयज्ञ एवं श्री विष्णु महापुराण कथा का होगा आयोजन

10 जनवरी से 17 जनवरी जनवरी तक होंगे धार्मिक कार्यक्रम

रितेश कटरे ब्युरो चीफ पुष्पांजलि टुडे बालाघाट

श्रीराम कृष्ण हरि मंदिर घोटी घुसमारा में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी सर्व सन्त पंथ आध्यात्मिक भक्तिमय सत्संग ज्ञानयज्ञ एवं श्री भगवान विष्णु महापुराण कथा का आयोजन मकर संक्राती पर्व के पावन अवसर पर 10 जनवरी से 17 जनवरी तक आयोजित किया जाएगा। श्री विष्णु महापुराण के कथा वाचक पुजनीय रमेश भाई ओझा के कृपा पात्र शिष्य पंडीत श्री जनार्दन भाई द्विवेदी के वाणी से एवं भगवान श्रीराम कथा के मर्मज्ञ पूज्य महन्त ज्ञानीदास महात्यागी तिरखे?ी आश्रम महाराष्ट्र के संरक्षक में अमृतमयवाणी से संगीतमय प्रवचन होगा। इसी के साथ ही विभिन्न राज्यों के साधुसंन्त, धर्म प्रचारक, समाज सुधारक, आचार्यों का सुभागमन दर्शन व अमृतवाणी से कीर्तन प्रवचन सुनने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यक्रम में प्रतिदिन वन्दनीय राष्ट्रसंत तुक?ोजी महाराज द्वारा रचित प्रति प्रातः सामुदायिक ध्यान, प्रति सांयकाल सामुदायिक प्रार्थना श्रीगुरूदेव सेवा मण्डल एवं वारकरी संम्प्रदाय तत्वप्रणालीनुसार हरिपाठ संचालन श्री नन्दलाल भूते प्रचारक अखिल भारतीय गुरूदेव सेवा मण्डल के द्वारा होगा।

कलश यात्रा के साथ निकलेगी प्रभातफेरी-10 जनवरी को मंगल कलश यात्रा, देवी देवताओं के मंदिरों

पंडित जनार्दन द्विवेदी महाराज

में पूजन ध्वज स्थापना के कार्यक्रम के बाद अपरान्ह 1 बजे से श्री विष्णु महापुराण कथा का शुभारम्भ किया जायेगा। तथा 10 जनवरी से 16 जनवरी तक कथा 1 बजे से 4 बजे तक होगी। कथा का विश्राम 16 जनवरी को 12 तक होगा तथा आमंत्रीत महापुरूष कीतर्नकार धर्म प्रचारक द्वारा रात्रि में भी 8 से 10 बजे तक कीर्तन प्रवचन का आयोजन होगा। कार्यक्रम के संरक्षक प. पूज्य महंत ज्ञानीदास जी महात्यागी के पावन उपस्थिती में एवं माननीय गौरीशंकर बिसेन अन्य पिछ?ा वर्ग कल्याण आयोग म. प्र. शासन के मुख्य आतिथ्य में तथा समस्त गुरूदेव सेवा मंण्डल एवं वारकरी सम्प्रदाय के एवं सभी धर्म प्रचारक के विशेष आतिथ्य में धर्म संन्त सम्मेलन का आयोजन किया गया है। दिनांक 17 जनवरी को सर्वसंत स्मृति एवं संस्था के आजीवन ब्रम्हलीन सदस्यों का श्रद्धासुमन मौन श्रद्धांजली के पश्चात् आमंत्रित संत महापुरूष धर्म प्रचारकों का अभिनन्दन एवं संस्था के संरक्षक सदस्य रमेश भटेरे पूर्व विधायक लांजी किरनापुर व जिला अध्यक्ष भाजपा बालाघाट के द्वारा किया जावेगा। इस कार्यक्रम में समाज प्रबोधन पर संक्षिप्त उद्बोदन एवं समय पर उपस्थित संत सभी महापुरूषों का अभिनंदन कार्यक्रम के पश्चात् गोपालकाला कीर्तन ह.भ.प. गुलाबचन्द खोबराग? गुरूजी के हस्ते होकर राष्ट्रवंदना आरती प्रसाद महाप्रसाद का कार्यक्रम के पश्चात् आभार संयोजक प्रेमलाल कलपुरिया एवं आय व्यय की प्रस्तुती श्यामलाल घोरमारे शिक्षक, प्रेमलाल मुरकुटे शिक्षक, नरेश अगासे सचिव द्वारा किया जावेगा। तन मन से सहयोग प्रदान कर कार्यक्रम में उपस्थित होकर लाभ ग्रहण करने हेतु समिति के द्वारा आग्रह किया गया है।

जीतो बैंगलुरु नार्थ का रियल स्टेट एक्सपो 14-15 जनवरी को होटल ललित अशोक में होगा आयोजन

पुष्पाजंली टुडे

बेंगलुरू ।आज तेज़ी से बढ़ते और फैलते शहरों में उतनी ही तेजी से व्यापारिक उन्नति व सफलता के अवसर भी बढ़ रहे है परंतु संपर्कों के अभाव व उचित प्लेटफॉर्म नही मिलने की वजह से सफलता का इंतजार बढ़ जाता है। इससे न केवल उत्पाद बनाने वाले अपितु वास्तव के खरीददारों को भी जानकारी के अभाव व उचित मूल्य पर नही खरीद पाने का मलाल रहता है। इस प्रकार बहुत सी वास्तविक समस्याओं के निदान के प्रयास समय-समय पर जीतो द्वारा करने की कोशिश की जाती है। यह बात जीतो बैंगलुरु नार्थ के अध्यक्ष इंदरचंद बोहरा ने चेप्टर की ओर से एवं केकेजी जोन के मार्गदर्शन में आने वाली 14-15 जनवरी को कुमारा कृपा रोड स्थित होटल ललित अशोक में आयोजित होने वाले दो दिवसीय रियलस्टेट एक्सपो एवं कोनक्लेव की तैयारियों के दौरान कही। उनके अनुसार यह एक्सपो वैष्णोदेवी ग्रूप के मुख्य प्रायोजन, आरआरबीसी एवं स्वामीत्व के सह प्रायोजन तथा कोनक्लेव एसएनएन राज कॉर्प के प्रायोजन में आयोजित किया जा रहा है। नार्थ के उपाध्यक्ष व एक्सपो संयोजक प्रवीण शाह ने जानकारी दी कि पूरे कर्नाटक में डेवलपर्स और प्रमोटरों की ताकत को बढ़ावा देने और प्रदर्शित करने के लिए इस तरह के एक रियल एस्टेट एक्सपो और कॉन्क्लेव की योजना बनाई है। जीतो का उद्देश्य समुदाय को सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण, उद्योग आधारित जागरूकता, सीखने और व्यापार नेटवर्किंग हासिल करना है। यह एक्सपो-कोनक्लेव सामुदाय के भीतर साझेदारी के अवसर देगा। उन्होंने बताया कि कोनक्लेव में विषय से संबंधित विशेषज्ञ वक्ताओं को सम्मिलित किया जायेगा।जीतो केकेजी अध्यक्ष अशोक सालेचा के अनुसार जोन

स्तर पर आयोजित होने वाले इस एक्सपो एवं कोनक्लेव की योजना अनूठी है पहली बार आयोजित होने वाले इस आयोजन से संपूर्ण केकेजी जोन में संपर्कों व व्यापार की बढ़ोतरी होगी। सालेचा के अनुसार जोन के बैंगलुरु दक्षिण, मैसूर, दावणगेरे, हुबली,होसपेट, बल्लारी, बेलगाम, बीजापुर इत्यादि चेप्टर के सदस्यों का प्रदर्शक व दर्शक दौनो ही रूपो में योगदान रहेगा। उन्होंने आशा व्यक्त सामाजिक सुविधा हेतु ऐसे आयोजन प्रतिवर्ष होते रहेंगे। जीतो बैंगलुरु नार्थ के महामंत्री सुधीर गादिया के अनुसार इस रियल स्टेट एक्सपो व कोनक्लेव से कर्नाटक के विभिन्न हिस्सो में बढ़ते रियलटी क्षैत्र के रियल स्टेट टाइकूंस एवं अलग अलग गुणवत्ता वाले खिलाड़ियों को एक गुलदस्ते की तरह एक साथ लाने का कार्य करेगा। यह आयोजन अधिकतम व्यावसायिक रास्ते बनाने के लिये डेवलपर और प्रमोटरों के साथ जुड़ने, एकीकृत करने, संबद्ध करने और नेटवर्क बनाने का अपनी तरह का मंच होगा। गादिया के अनुसार जीतो के इस रियल स्टेट एक्सपो एवं कोनक्लेव से न केवल रियल स्टेट उद्योग को आगे बढ़ाने का अवसर मिलेगा अपितु कोनक्लेव में स्पीकर टॉक, पेनल डिस्कशन व कॉन्फ्रेंस से नवीनतम जानकारियाँ भी प्राप्त होगी। कोनक्लेव में 15 से अधिक विशेषज्ञ संपत्ति, निवेश और रियलटी बाजारो के नवीनतम ज्ञान पर चर्चा है। उपाध्यक्ष सिद्धार्थ बोहरा के अनुसार समाज की सेवा, आर्थिक उन्नति एवं आपसी जुड़ाव के प्रति जीतो हमेशा प्रतिबद्ध रहा है उसी के फलस्वरूप इस रीयल स्टेट एक्सपो का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने संपूर्ण जनमानस से एक्सपो में आकर उसमें निहित लाभकारी जानकारियों का फायदा उठाने का अनुरोध किया। आयोजन संबंधित अधिक जानकारी के लिये जीतो कार्यालय से संपर्क किया जा सकता है।

देश के असली मुद्दों से कहीं भटक न जाए मानसून सत्र

अक्सर संसद सत्र की शुरुआत से पहले ही पक्ष-विपक्ष के बीच टकराव शुरू हो जाता है, लेकिन दुर्भाग्य से यह टकराव जनता से जुड़े मुद्दों को लेकर नहीं, बल्कि किन्हीं अन्य विषयों पर होता है। इस बार भी ऐसा ही हुआ है। विपक्ष की नाराजगी उन शब्दों को असंसदीय घोषित करने को लेकर है, जिनका इस्तेमाल वह सदन में सरकार की घेराबंदी के लिए करता है। नाराजगी की एक अन्य वजह संसद भवन परिसर में सांसदों द्वारा किए जाने वाले धरना-प्रदर्शन पर रोक लगाने को लेकर है। इन मुद्दों पर विपक्ष के आक्रामक रुख से यह तय माना जा रहा है कि संसद के भीतर भी यही मुद्दे हावी रहेंगे। यदि ऐसा होता है, तो महंगाई, बेरोजगारी, देश के कई हिस्सों में बाढ़ से मची तबाही जैसे मुद्दे पीछे छूट सकते हैं। शब्दों को असंसदीय घोषित करने पर क्या विपक्ष का विरोध जायज हैड़ देखा जाए, तो संसद व विधानसभाओं में असंसदीय शब्दों को चिह्नित करने का कार्य एक सतत प्रक्रिया है। विपक्ष का तर्क कि चुनींदा शब्दों को असंसदीय घोषित कर उसकी आवाज रोकने का प्रयास हो रहा है, गले नहीं उतरता है। विपक्ष की जिम्मेदारी है कि वह लोकतंत्र की मजबूती के लिए अपनी भूमिका को मजबूत बनाए। जनता से जुड़े मुद्दों को प्रमुखता से संसद में उठाए। इसके लिए उसके पास शब्दों की कमी नहीं होनी चाहिए। फिर, सरकार की कमियों को संसदीय शब्दों का उपयोग कर भी उजागर किया जा सकता है। संतुलित शब्दों और भाषा के प्रयोग से संसद की मर्यादा भी कायम रखनी चाहिए। यह पक्ष-विपक्ष, दोनों की जिम्मेदारी है। संसद की मर्यादा को कायम रखना जहां विपक्ष की भी जिम्मेदारी है, वहीं सरकार की जिम्मेदारी है कि वह लोकतांत्रिक परंपराओं का पालन करते हुए विपक्ष को भी बात रखने का पूरा मौका दे। यदि संसद के भीतर सत्ता पक्ष या सरकार विपक्ष को अपनी बात ही कहने का मौका न दे, तो यह संसदीय नियमों व परंपराओं के विरुद्ध होगा। ऐसी स्थिति में विपक्ष यदि संसदीय मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुए संसद के भीतर और बाहर विरोध करता है, तब देश की जनता विपक्ष पर नहीं, सरकार पर सवाल उठाएगी। वरना बिना वजह हंगामा करना विपक्ष को ही नुकसान पहुंचाता है। इसी प्रकार, संसद भवन परिसर में धरना-प्रदर्शन को लेकर जारी निर्देश पर भी विपक्ष नाराज है, पर राज्यसभा सचिवालय के अनुसार, 2013 और उससे पहले भी समय-समय पर ऐसे आदेश जारी हुए थे। हालांकि, तब और अब के आदेशों की भाषा में फर्क है। पहले जहां यह बात अनुरोध के रूप में कही जाती थी, वहीं अब निर्देश के रूप में है। वैसे, संसद भवन परिसर में प्रतीकात्मक विरोध का चलन बहुत पहले से है और उस पर रोक का औचित्य समझ में नहीं आता। मानसून सत्र के दौरान राष्ट्रपति एवं उप-राष्ट्रपति चुनाव के दो अहम कार्य होने हैं। इसके अलावा, दोनों सदनों में करीब दो दर्जन से अधिक विधेयकों के पेश होने, चर्चा और पारित होने की संभावना है। इनमें केंद्रीय बिजली विधेयक, एंटी डोपिंग विधेयक, मध्यस्थता विधेयक, डीएनए टेक्नोलॉजी विधेयक ऐसे हैं, जो सीधे आम लोगों से जुड़े हैं। एंटी डोपिंग विधेयक खिलाड़ियों में नशे के इस्तेमाल को रोकने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक एंटी डोपिंग एजेंसी के गठन के इरादे से लाया जा रहा है। मध्यस्थता विधेयक इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि अदालतों में मुकदमों की भरमार है। इसी प्रकार डीएनए टेक्नोलॉजी विधेयक कानूनी प्रक्रिया में डीएनए तकनीक के विधिवत इस्तेमाल का रास्ता खोलता है।

आज का राशिफल

मिथुन- एक दिन में बहुत कुछ हो सकता है। एक दिन आपको कुछ करना पड़ सकता है। अगर आप कर सकते हैं, तो यह सुनिश्चित करने के लिए एक समय सारिणी से चिपके रहने का प्रयास करें कि आपके पास अपना कार्य पूरा करने के लिए पर्याप्त समय है। तीव्र संचार निश्चित रूप से उच्च प्राथमिकता पर कार्यों को पूरा करने में मदद करेगा। पूरे दिन ग्राहकों या सहकर्मियों द्वारा किसी न किसी माध्यम से उठाई गई चिंताओं को दूर करना पड़ सकता है।

कर्क- आज आपके लिए अपने विचारों को व्यवस्थित करना आसान होगा। अगर आप किसी प्रस्ताव पर काम कर रहे हैं या परियोजना और एक रूपरेखा के साथ आने की जरूरत है, आपका दिमाग सक्रिय होगा और आप कुछ अद्भुत विचारों के साथ सामने आएंगे। जितना अधिक आपको संख्याओं और गणनाओं के साथ करना होगा, उतना ही बेहतर होगा। तकनीक से जुड़े किसी तकनीकी कार्य को संभालना भी आपके लिए आसान रहेगा।

सिंह- काम से जुड़े कार्यों में आपका उत्साह और ध्यान की प्रशंसा बॉस कर सकते हैं। आपके सहकर्मी आपके उत्साह के परिणामस्वरूप आपके साथ अधिक निकटता से काम करना चाहेंगे। यह बहुत कम संभावना है कि यह वरिष्ठों द्वारा ज्ञात नहीं होगा। इसके परिणामस्वरूप पदोन्नति होने की संभावना है। धैर्य रखें, आगे देखने के लिए बहुत कुछ है।

कन्या- कुछ नया सीखने की प्रबल इच्छा होने की प्रबल संभावना है। इसलिए आपको कुछ नई क्षमताओं को हासिल करने के लिए कोशिश करते रहना चाहिए। आपके कामकाजी जीवन की गुणवत्ता और आपके द्वारा दी जाने वाली धनराशि दोनों लाने में सुधार होने की संभावना है। आप जो करते हैं उसके लिए आपके मन में बहुत जुनून होगा और आपके पास आपका एक महत्वपूर्ण परियोजना पर नजर रखें जिसमें आपके पेशेवर पथ के लिए चमत्कार करने की क्षमता हो।

तुला-जब सामाजिक स्थितियों और व्यावसायिक चर्चाओं की बात आती है, तो आप महसूस कर सकते हैं कि ठोकर लग सकती है। आप किसी सहकर्मी के साथ बातचीत से बच रहे हों क्योंकि आपका मन नहीं कर रहा है। राजनयिक दृष्टिकोण का उपयोग करने से आपको किसी भी तनाव या परेशानी से निपटने में मदद मिलेगी। यह संभव है कि आप एक कुशल के रूप में सेवा करने के लिए आवश्यक कौशल विकसित करेंगे।

वृश्चिक- रुके हुए डर या चिंताओं को दूर करने का प्रयास करें। विचार करें कि क्या आप एक अच्छा काम कर रहे हैं या आप बहुत अधिक गलतियां कर रहे हैं। अपने आप पर बहुत अधिक कठोर होने के बजाय, इस पर विचार करें कि आप कैसे हैं भविष्य में आपने जो किया उस पर सुधार कर सकते हैं। अपने विकल्पों की समीक्षा करें और समाधानों की तैयारी करें।

धनु- सिर ठंडा रखें। आम तौर पर, आप एक शांत व्यक्ति होते हैं, लेकिन आज आप थोड़े तर्कहीन से हो सकते हैं।

मकर- सहयोग से आपकी पेशेवर प्रतिष्ठा को लाभ हो सकता है। इस प्रक्रिया में अपने वर्तमान कामकाजी संबंधों और व्यवस्थाओं को पुनर्गठित करने से यह संभव है कि प्रबंधन मुश्किलें आ सकती हैं। कुछ लोग आपस में मेल नहीं खाते, या आप इस बारे में अनिश्चित हो सकते हैं कि किससे जुड़ना है। इस वजह से आप और आपके सहकर्मी एक साथ काम करने पर प्रेरित होंगे।

कुंभ- कार्यक्षेत्र में आज का दिन उन कर्मचारियों को पहचानने और पुरस्कृत करने का है। वृद्धि और विकास की सबसे अधिक संभावना है। सुनिश्चित करें कि आपके बेहतरीन कर्मचारी जानते हैं कि वे कितना करते हैं उन्हें प्रशंसा और मान्यता के साथ पुरस्कृत करके आप का मतलब है।

मीन- अगर आप विकसित होते हैं तो आप अपने दम पर काम करने में सक्षम होंगे और यहां तक कि अपनी प्रतिष्ठा भी बना पाएंगे। अपने जिज्ञासु और खुले दिमाग का उपयोग करें, साथ ही किसी भी आउट-ऑफ-द-बॉक्स सोचें। जब भी संभव हो अपनी मौलिकता और आविष्कारशीलता को लागू करने का प्रयास करें। यह न केवल आपको नई प्रतिभाओं को सीखने की अनुमति देगा बल्कि यह आपके पेशेवर में भी सुधार करेगा।

यूक्रेन-रूस लड़ाई को क्या नाम दें

जंग जब शुरू हुई थी, तब तकरीबन सभी ने इसे शीत युद्ध की वापसी कहना शुरू कर दिया था। किसी युद्ध विश्लेषक के लिए यह नया शीत युद्ध था, तो किसी के लिए यह दूसरा शीत युद्ध। यह कहना बहुत आसान भी था, क्योंकि शीत युद्ध की तरह इस बार भी तनाव मुख्यतः अमेरिका और रूस के बीच था। इस बार भी दोनों की सेनाएं आमने-सामने नहीं लड़ रही थीं। शीत युद्ध की तरह ही इस बार भी दुनिया भर में हथियारों की एक नई होड़ शुरू हो गई थी। मगर नए तनाव को पुराने चश्मे से देखने का यह सिलसिला लंबा नहीं चल सका। जंग शुरू होने के कुछ समय बाद ही इस नए शीत युद्ध की अवधारणाओं से असहमतियां उपजनी शुरू हो गईं। जिसे हम शीत युद्ध कहते थे, वह दरअसल दो परस्पर विरोधी विचारधाराओं की लड़ाई थी- साम्यवाद और उदारवाद या पूंजीवाद। लेकिन अब जो तनाव है, उससे विचारधाराओं की लड़ाई नदारद है। इस लड़ाई में आपको रूस समर्थक या यूक्रेन समर्थक देश तो बहुत आसानी से दिख जाएंगे, लेकिन वह दुनिया अब कहीं नहीं है, जिसमें इसका अर्थ होता था, साम्यवाद समर्थक और पूंजीवाद समर्थक। एक विचार यह भी है कि दरअसल जिसे हम शीत युद्ध कहते हैं, वह युद्ध था ही नहीं। वह एक तरह का संतुलन था, जिसे अंदर खदबदाती तरह-तरह की आग के बावजूद दुनिया ने साध रखा था, जबकि इस समय मामला किसी संतुलन के सधने का नहीं, बल्कि बिगड़ जाने का है। कुछ इतिहासकार तो अब यहां तक कहने लगे हैं कि दुनिया में इस समय वैसी ही परिस्थितियां बनती जा रही हैं, जैसी प्रथम विश्व युद्ध के पहले थीं। इसलिए रूस और यूक्रेन की इस लड़ाई को किसी बड़े युद्ध का पूर्वकाल भी कहा जा रहा है। हम कामना करेंगे कि ऐसा न हो। जब शीत युद्ध था, तब अमेरिका और सोवियत संघ दुनिया की सबसे बड़ी ताकतें थीं, जिनके आसपास उस तनाव का पूरा ध्रुवीकरण हुआ था। अमेरिका तो अब भी अपनी जगह पर बना हुआ है, लेकिन रूस के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता। सैनिक ताकत के रूप में चीन बहुत पहले रूस को काफी पीछे छोड़ चुका है। चीन ने जिस तरह के हथियारों का उत्पादन किया है और जिस तरह से अपनी सेना को आधुनिक तकनीक से सुसज्जित किया है, उसके बाद से यह माना जाने लगा है

कि ताकत के मामले में चीन अगर अमेरिका से बीस नहीं है, तो उन्नीस भी नहीं रह गया है। हालांकि, यह भी सच है कि चीन के पास युद्ध लड़ने का कोई ताजा अनुभव नहीं है। उसने आखिरी लड़ाई सन 1979 में वियतनाम से लड़ी थी, जिसमें उसे हार का मुंह देखना पड़ा था। बावजूद इसके चीन को ही इस समय दुनिया की दूसरी बड़ी ताकत माना जाता है। अमेरिका अपनी तैयारियां भी इसी हिसाब से कर रहा है। क्वाड जैसी व्यूह रचनाएं भी इसीलिए तैयार की जा रही हैं। रूस और यूक्रेन की लड़ाई में चीन ने जो रुख अपनाया है, उसने सभी को हैरत में डाला है। वह खुले तौर पर रूस के समर्थन में नहीं आया, लेकिन उसने व्लादिमीर पुतिन को रोकने की कोशिश भी नहीं की। तमाम विश्लेषकों का कहना है कि चीन इस लड़ाई के लंबा खिंचने में ही अपना हित देख रहा है। जितनी लंबी यह लड़ाई खिंचेगी, रूस उतना ही कमजोर होगा और उतनी ही उसकी चीन पर निर्भरता बढ़ेगी। यानी, अगर नए तनाव के ध्रुव अमेरिका और चीन हैं, तो फिर अमेरिका और रूस के शीत युद्ध की बात करने का कोई अर्थ नहीं। वर्तमान के विश्लेषण में एक खतरा यह भी होता है कि हम अक्सर उसमें अतीत का दोहराव या उसकी कोई परछाई खोजने लग जाते हैं। हम इतिहास से सबक नहीं लेते, लेकिन उसके उदाहरणों के प्रभाव में आ जाते हैं। अगर कोई तानाशाह दिखता है, तो हम उसकी तुलना तुरंत हिटलर से करने लगते हैं। कहीं कोई अति-राष्ट्रवादी विचारधारा उभरती है, तो हम उसमें नाजीवाद के दर्शन करने लगते हैं। इसी तरह, किसी भी वैश्विक तनाव की व्याख्या हम दोनों विश्व युद्ध और शीत युद्ध की सीमाओं में खोजते हैं। नए दौर को पुराने वक्त से परिभाषित करने का एक नतीजा यह भी होता है कि हम सरलीकरण कर देते हैं और समस्या की बहुत सारी जटिलताएं नजरअंदाज हो जाती हैं। यही रवैया हम रूस और यूक्रेन की वर्तमान लड़ाई के मामले में भी अपना रहे हैं। इस युद्ध ने पश्चिमी देशों को दो हिस्सों में जरूर बांटा है, लेकिन बाकी दुनिया उस तरह से दो हिस्सों में नहीं बंटी, जैसी शीत युद्ध की दो ध्रुवीय दुनिया बंटी थी। यहां तक कि वे देश भी, जो अपने आप को गुटनिरपेक्ष कहते थे और किसी एक का पक्ष न लेने की कसमें खाते थे, वक्त-बेवक्त किसी एक पक्ष के साथ खड़े दिखाई देते थे। इस बार ऐसा नहीं है। कम से कम अभी तक तो नहीं है। यह उम्मीद कैसे की जाए कि 21वीं सदी के 22वें साल में यह दुनिया जब किसी तनाव में फंसेगी, तो 21वीं सदी वाले समीकरण ही उसकी किस्मत का फैसला करने आगे आएंगे। ऐसा सोचना पिछली एक सदी के इतिहास और उस दौरान आए व्यापक बदलावों को भी नकारना होगा।

> किसी भी युद्ध के लिए डेढ़ सौ दिन का समय बहुत लंबा होता है। लड़ाई चाहे कितनी भी भयानक क्यों न चल रही हो, इतने दिनों में युद्ध की उबाऊ खबरें अखबारों में अंदर के पन्नों पर चली जाती हैं और न्यूज चैनल उनका जिक्र तक बंद कर देते हैं। रूस और यूक्रेन के बीच चल रही जंग फिलहाल इसी दौर से गुजर रही है। 24 फरवरी को जब रूस ने यूक्रेन पर हमला बोला था, तब बड़ी आसानी से यह मान लिया गया था कि जल्द ही वह रूस की बलशाली सेना के कब्जे में आ जाएगा। टेलीविजन की खबरों में हर पल यही बताया जाता था कि रूसी सेना यूक्रेन की राजधानी कीव से अब कितनी दूर है। यूक्रेन तो खैर शुरू से ही रक्षात्मक मुद्रा में था, लेकिन इस युद्ध में रूस को जो पापड़ बेलने पड़ रहे हैं, उसने आसान सी समझी जाने वाली विजय यात्रा को टेढ़ी खीर बना दिया है। लेकिन यह जंग उससे भी टेढ़ी खीर युद्धशास्त्र के उन माहिरों और राजनय के विशेषज्ञों के लिए बन गई है, जो इस लड़ाई को परिभाषित करने की कोशिश कर रहे हैं।

कश्मीर में मौसम बदल रहा है

क्या कश्मीर में कुछ बदल रहा है लाल चौक की तंग गलियों में कांसे का सामान बेचते उस व्यापारी को मुझसे इस सवाल की उम्मीद न थी। वह तो यह भी नहीं जानता था कि मैं कौन हूं उसकी व्यग्रता देख मैंने अपना परिचय देते हुए खुलकर बोलने का अनुरोध किया। उसका जवाब था- 'देखिए, मैं कोई सियासतदां नहीं, एक सामान्य व्यापारी हूं, पर जैसा कि आप कह रहे हैं, आप 1980 के दशक से यहां आते रहे हैं, तो खुद अपनी आंखों से बदलाव देख लीजिए। हमारे यहां माल भरा पड़ा है। आपके सामने ही दो टूरिस्ट खरीदारी करके निकले हैं। सामने की सड़क पर जाम लगा हुआ है। इस बार टूरिस्ट भी ज्यादा आए हैं। बारिश के मौसम में इतनी बड़ी तादाद में भला कौन पहाड़ों पर घूमने जाता है!' वह सही कह रहा था। उस तक पहुंचने से पहले हमारी गाड़ी तंग सड़कों पर कई बार फंस चुकी थी। मैं इन गलियों से पहले भी गुजरा हूं। 1980-90 के दशकों में जाम खस्ताहाल सड़कों और पुलिस या अर्द्धसैनिक बलों की नाकेबंदी से लगता था। अब सड़कें सुधर गई हैं, पर देश के अन्य पर्यटन स्थलों की तरह हर रोज बढ़ते वाहनों की तादाद, पनपती आबादी का दबाव और बड़ी संख्या में सैलानियों की आमद से यातायात बाधित होता है। सुरक्षा बलों के अधिकांश अवरोधक हटा लिए गए हैं। सिर्फ लाल चौक नहीं, मैसूमा की गलियों में भी कुछ उत्सुकता, तो कुछ निश्चिंतता दिखाई दी। जो नहीं जानते, उन्हें बता दूं। अलगाववादियों के अगुआ यासीन मलिक यहीं के रहने वाले हैं। इस इलाके में तीन साल पहले तक आए दिन बंद का आह्वान होता। पत्थरबाजों का गढ़ भी यही था। बहुत से व्यापारियों ने यहां से पुश्तैनी दुकानें बेचकर अपने शो रूम सुरक्षित जगहों पर बना लिए थे। अब हालात कैसे हैं, यह मैं ऊपर बता चुका हूं। बाद में कुछ अधिकारियों और जागरूक नौजवान व्यापारियों से मिलता हूं। घाटी में बिजली की समस्या लाइलाज मानी जाती थी। हालात अभी भी आदर्श नहीं हैं, पर राज्य का कुल विद्युत उत्पादन बढ़ाकर 5,951 मेगावाट पहुंचा दिया गया है। आजादी के बाद से अब तक कभी विद्युत उत्पादन 3,500 मेगावाट से अधिक नहीं रहा। जम्मू-कश्मीर की हुकूमत संभालने के दो वर्ष पूरे करने जा रहे उप-राज्यपाल मनोज सिन्हा जानते हैं कि घाटी को मुख्यधारा में लाने का अकेला जरिया

विकास और रोजगार का सृजन है, इसीलिए इस दौरान युद्ध-स्तर पर काम कर 51 हजार लंबित योजनाओं को परवान चढ़ाया गया। लक्ष्य प्राप्ति के लिए भरोसे की कश्मीर वापसी जरूरी है। इसके लिए जन सामान्य से संवाद के साथ जन शिकायतों के समयबद्ध निराकरण का रास्ता निकाला गया। नतीजतन, पत्थरबाजी और अलगाववादी जुलूस अतीत की बात बन गए हैं। यह प्रक्रिया रुके नहीं और तेज हो, इसके लिए पीएमओ और गृह मंत्री स्वयं नियमित तौर पर 'मॉनिटरिंग' करते हैं।

तो क्या कश्मीर में हालात सामान्य हो गए हैं-यह कहना जल्दबाजी होगी, पर जुलाई के आखिरी हफ्ते में घाटी के तमाम हिस्सों में घूमते हुए लगा कि जमीनी स्तर पर यकीनन हालात बदले हैं। कश्मीर को मंजिल चाहे जब मिले, पर हुकूमत ने सही रास्ता पकड़ लिया है। आपके मन में सवाल कौंध रहा होगा कि अगर ऐसा है, तो फिर कश्मीरी पंडितों और अमनपसंद कश्मीरियों की 'टारगेट किलिंग' क्यों हो रही हैड़ इसकी सबसे बड़ी वजह पाकिस्तान से आ रहे आतंकवादी हैं। कोई कुछ भी दावा करे, पर यह सच है कि घाटी में विदेशी आतंकवादियों की आमद अभी तक जारी है। ये दहशतगर्द न केवल वहां के परिवेश को बिगाड़ते हैं, बल्कि कठोर प्रशिक्षण और उनकी कट्टर जेहनीयत उन्हें सुरक्षा बलों पर हमला करने के लिए उकसाती है। वे आम तौर पर घात लगाकर हमला करते हैं और भागने के बजाय सुरक्षा बलों से मोर्चा लेते हैं। उन्हें सिखाया गया है कि आप मुठभेड़ को लंबे से लंबा खींचें, भले ही आपकी जान क्यों न चली जाए। निहितार्थ साफ है। जितनी लंबी मुठभेड़, उतनी बड़ी खबर। खबरें बनें, और बनती रहें, इसके लिए सरहद पार बैठे रणनीतिकार सोच-समझकर 'टारगेट' का चयन करते हैं। सुरक्षा बलों का सबसे बड़ा सिरदर्द यही विदेशी आतंकवादी हैं। सेना का काम इन्हें सरहदों पर रोकना है। हमारे जवान इसके लिए हरदम जान की बाजी लगाए रहते हैं, पर सीमाओं की दुरूहता और सीमित संसाधन उनकी राह में बाधा उत्पन्न करते हैं। सरहद पर दोनों तरफ सामान ढोने वालों के स्थानीय जत्थे सक्रिय हैं। उनमें से कुछ पर न केवल जरूरी सूचनाएं उस पार तक पहुंचाने का संदेह है, बल्कि वे गफलत पैदा करने की कोशिश भी करते हैं। यही नहीं, पाकिस्तानी 'प्रॉपगैंडा मशीन' और वहां के दहशतगर्द हमारे बीच जमे स्थानीय अलगाववादियों की मदद से कच्चे मन के किशोरों को बरगलाने में अक्सर कामयाब हो जाते हैं। पाया गया है कि एक विदेशी आतंकवादी एक से पांच किशोरों को नियंत्रित करने की कोशिश करता है। अपनी बात समझाने के लिए एक घटना बताता हूं। हुआ यूं कि जम्मू-कश्मीर पुलिस ने संयुक्त ऑपरेशन में 'टारगेट किलिंग' के एक अभियुक्त को मुठभेड़ में मार गिराया था। नियमानुसार उसका शव जब उसके घरवालों के सुपुर्द किया जा रहा था, तब उन्होंने आरोप जड़ दिया कि हमारे अबोध बच्चे को आपने 'एनकाउंटर' में मार गिराया है। वहां तैनात पुलिस अधिकारियों ने जब उन्हें उस किशोर की कॉल-डिटेल दिखाई, तो वे भौंचक्के रह गए। उनका बेटा उन्हें पिछले कुछ महीनों से यह कहकर भरमा रहा था कि मैं 'ऑनलाइन क्लासेज' ले रहा हूं, जबकि वह घंटे से डेढ़ घंटे तक सरहद पारके 'हैंडलर' से बात करता था।

कमियों को मात देकर आगे बढ़ना ही जिंदगी

सूरदास साहित्य में चाहे जितने सराहे गए हों, लोक में उनका नाम 'तिरस्कार' का ही पर्याय बना रहा। 21वीं सदी के इस मोड़ पर भी तथाकथित सभ्य समाजों ने शारीरिक विकार के शिकार लोगों के लिए संबोधन तो बहुत प्यारे-प्यारे गढ़े, पर उनके व्यवहार में कोई खास फर्क नहीं आया। लेकिन सारी सामाजिक विद्रूपताओं से लड़ते हुए अपनी छोटी-सी उम्र में रेशम तलवार ने एक प्रेरक मिसाल कायम की है कि दिव्यांग भी जीने का सलीका जानते हैं और अगर अपने साथ दें, तो वे भी कमाल कर सकते हैं। उम्र के 25वें पड़ाव पर खड़ी दिल्ली की रेशम को कुदरत ने आंखें तो दी थीं, मगर वह उनमें रोशनी डालना भूल गई। बेटी की पैदाइश पर रिया और रविंदर तलवार बहुत खुश हुए थे, बेटे रवीश के बाद रेशम की आमद से उनका परिवार जो मुकम्मल हो गया था। लेकिन जब डॉक्टरों ने बताया कि नवजात बच्ची दृष्टि बाधित है, तो उन्होंने अपनी उस पीड़ा को अपने भीतर ही जज्ब कर लिया, ताकि उस मासूम जान को वे दुनिया की हिकारत भरी निगाहों से बचा सकें। पर सच्चाई कितने दिनों तक ओझल रहतीड़ बहरहाल, माता-पिता और बड़े भाई की नजरों से नन्ही रेशम ने जिंदगी को टटोलना-समझना शुरू किया। यह तो कभी मापा ही नहीं जा सकता कि इसके लिए कितने धैर्य, कितनी करुणा की जरूरत पड़ती है, लेकिन तलवार परिवार ने बेटी को कभी स्नेह की कमी नहीं महसूस होने दी। माता-पिता ने तय किया कि बेटी को खुदमुख्तार बनाना होगा, ताकि वह एक गरिमामय जिंदगी जी सके। इसके लिए उसे नियमित शिक्षा दिलाने के साथ-साथ उसमें दुनिया का सामना करने लायक साहस भी भरना था। जाहिर है, रेशम के लिए ब्रेल लिपि सीखना बहुत जरूरी था। नन्ही बच्ची अकेली न पड़ जाए, इसलिए मां ने खुद भी उसके साथ ब्रेल लिपि सीखी। उन्हें कदम-कदम पर बेटी का साथ देना था। ब्रेल लिपि सीखने के बाद स्कूल में दाखिला मिलने में खास दिक्कत नहीं हुई। लेकिन जब दुनिया से सामना हुआ, तो उसकी खामियों से भी साबका पड़ना ही था। स्कूल के सहपाठी तो नादान थे, उनके गैर-संजीदा व्यवहार की शिकायत कोई क्या करता, तकलीफ तो तब होती थी, जब कोई शिक्षक या

करीबी रिश्तेदार मर्म पर वार कर जाता। ऐसा अक्सर होता कि घर आया कोई करीबी संबंधी रेशम के दृष्टिदोष को लेकर सहानुभूति जताते हुए माता-पिता को यह एहसास कराने की कोशिश करता कि उन्हें तो अब उम्र भर अपनी बेटी की देखभाल करनी है। यह सब पूरे परिवार को दुखी कर देता था। कई बार शिक्षक भी धैर्य गंवा देते थे। सहपाठी नोट्स साझा करने से आनाकानी करते, तो शिक्षक अतिरिक्त वक्त देने से, लेकिन घर पहुंचने पर मां जैसे सारे जख्मों पर स्नेह का मरहम रख देती थीं। कक्षा में पिछड़ने का जो एहसास दिमाग पर सवार होकर घर चला आता था, मां-पिता व भाई का दुलार उसे मिनटों में धो देता और एक नई ऊर्जा के साथ रेशम पढने में जुट जातीं। वह पढ़ने में हमेशा ही एक अच्छी छात्रा रहीं और यही कारण है कि 10वीं की बोर्ड परीक्षा में शानदार प्रदर्शन के लिए सीबीएसई ने उन्हें 'इंदिरा अवॉर्ड' से पुरस्कृत किया था। रेशम के माता-पिता संगीत की दुनिया से जुड़े रहे हैं, इसलिए घर का माहौल भी संगीतमय रहा। मां जागरण, देवी की चौकी आदि में गाया करती हैं, तो पिता संगीत तैयार करते हैं। रेशम ने बचपन से ही मां को हारमोनियम पर रियाज करते देखा था, लेकिन बेटी की संगीत-प्रतिभा से माता-पिता तब तक बेखबर रहे, जब तक कि उसने स्कूल प्रतियोगिता में खिताब न जीत लिया। उस वक्त रेशम सिर्फ 10 साल की थीं। तब मां को लगा कि रेशम को संगीत की औपचारिक शिक्षा दिलानी चाहिए। गुरु की तलाश हुई और पंडित सोमनाथ शर्मा के यहां रेशम ने शास्त्रीय संगीत सीखना शुरू कर दिया। हालांकि, तब भी माता-पिता का आग्रह यही था कि रेशम अपनी अकादमिक शिक्षा पूरी करें। लेकिन वह तमाम प्रतियोगिताओं में शिरकत करती रहीं। बारहवीं करने के बाद रेशम दिल्ली विश्वविद्यालय के शिवाजी कॉलेज पहुंचीं। अब तक वह गीत-संगीत, रिकॉर्डिंग के क्षेत्र में करियर बनाने को लेकर गंभीरता से सोचने लगी थीं। कॉलेज के दोस्तों ने भी अलग अंदाज में उन्हें व उनकी प्रतिभा को प्रोत्साहित किया। वे कॉलेज के सभी सांस्कृतिक आयोजनों, महोत्सवों में न सिर्फ रेशम का नाम शामिल कराते, बल्कि उन्हें स्टार सिंगर के तौर पर पेश भी करते। इन कार्यक्रमों ने रेशम के भीतर एक अपूर्व आत्मविश्वास पैदा किया और वह सारेगामापा, इंडियल आइडल जैसे मशहूर रियलिटी कार्यक्रमों में भी गईं। हालांकि, इन बड़े मंचों पर उनका सफर छोटा रहा, मगर वहां से हासिल अनुभव और नाम ने उन्हें सैकड़ों कार्यक्रमों में गाने का मौका दिलाया। यही नहीं, रेशम ने अपनी प्रतिभा का विस्तार करते हुए जन्मदिन और शादी की सालगिरह जैसे मौकों पर लोगों के लिए 'जिंगल' रचने का काम भी शुरू कर दिया। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में मास्टर रेशम तलवार इन दिनों 'वॉयसओवर' कलाकार के तौर पर अपने को स्थापित करने में जुटी हैं। उन्होंने कई मशहूर उत्पादों के विज्ञापनों को अपनी आवाज दी है और कई प्रोजेक्ट पर अभी काम कर रही हैं। बकौल रेशम, 'अगर अपनों का साथ हो और आपकी कोशिश ईमानदार हो, तो कोई एक कमी आपकी राह कभी नहीं रोक सकती।' हम सबने अपने नसीब को कोसते हुए लोगों को खूब देखा है, लेकिन रेशम तलवार जैसे लोगों का संघर्ष, आत्मविश्वास और कामयाबी बताती है कि जिंदगी को बहानों की नहीं, बहादुरी की जरूरत होती है।

पीएम आवास, से वंचित लोगों के लिए लड़ेगी भाजपा मोर आवास मोर अधिकार

बैठक में लिया गया निर्णय, आने वाले दिनों में बडे आंदोलन की है तैयारी-जितेंद्र मांझी

संवाददाता हेमचंद नागेश

देवभोग । मोर आवास मोर अधिकार योजना के तहत प्रधानमंत्री आवास योजना से वंचित हितग्राहियों के हित में जिला भाजपा आने वाले दिनों में एक बड़ा आंदोलन करने की तैयारी करने जा रही है। इस संबंध में मोर आवास मोर अधिकार की उपस्थिति में जिला भाजपा कार्यालय में तथा देवभोग के बैठक में मार्गदर्शन दिया गया। जिसमे प्रभारी जितेन्द्र मांझी अ.ज.जा.मोर्चा मंडल अध्यक्ष, प्रमोद यादव जिला कोषाध्यक्ष पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ, सनत कुमार मांझी भाजपा नेता सरपंच झाखरपारा, मोहन मरकाम मंडल उपाध्यक्ष, डोवेंद्र सोनी संयोजक भाजपा एन.जी.ओ प्रकोष्ठ, मधुसदन सोरी, शंकर मांझी, जितेन्द्र सोनी, परमानंद मरकाम, बीर सिंह, गंभीर यादव,

समस्त हित ग्राही उपस्तिथि देकर भूपेश सरकार का विरोध प्रदर्शन किये।मोर आवास मोर अधिकार के तहत भाजपा का प्रदर्शन~ इसी कड़ी में देवभोग विकासखंड के ग्राम पंचायत गंगराजपुर शक्ति केंद्र में मोर आवास मोर अधिकार के तहत भाजपा ने धरना प्रदर्शन किया. जिसमें प्रभारी जितेंद्र मांझी जी अ.ज.जा. मोर्चा मण्डल अध्यक्ष, सनत मांझी जी भाजपा नेता सरपंच झाखरपारा सहित भाजपा के बड़े नेताओं ने शिरकत की, भाजपा ने मंच से राज्य सरकार के खिलाफ कई मुद्दों पर आवाज बुलंद करने की कोशिश की, प्रमुख मुद्दों के तौर पर भाजपा ने प्रधानमंत्री आवास के रुके हुए मामलों को उठाया।

देवभोग कि पहली महिला अधिवक्ता बनी दीपिका बघेल

संवाददाता हेमचंद नागेश

देवभोग से पहली महिला अधिवक्ता होने का नाम देवभोग ब्लॉक के टिकरापारा गांव की अनामो बघेल सेवानिवृत्त प्रचार्य देवभोग कि पुत्री कुमारी दीपिका बघेल ने किया अपने नाम। दीपिका बघेल कि प्रारंभिक शिक्षा देवभोग कन्या शाला मे संपन्न हुई।दानी गर्ल्स रायपुर मे हायर सेकेंडरी कि प?ाई कर ग्रेजुएशन महंत कालेज बीएड कि पड़ाई विकास शिक्षा महाविद्यालय एम.ए (इंग्लिश लिटरेचर)कि पड़ाई सुंदरलाल शर्मा कालेज व एल.एल.बी कि पड़ाई छत्तीसगड़ कालेज मे संपूर्ण कर देवभोग कि पहली महिला अधिवक्ता होने का दीपिका बघेल ने अपने नाम दर्ज कर लिया है। जिला सत्र न्यायालय रायपुर मे अधिवक्ता के रुप मे अपना सेवा प्रदान कर रहे हैं। दीपिका बघेल ने मिडिया से बात करते हुए कहा कि मेरी सबसे बड़ी सहयोगी व शक्ति मेरी माता चिन्तुला बघेल है। देवभोग वह क्षेत्र है जहां प्रतिभाशालियों कि कोई कमी नहीं है यदि सही मार्गदर्शन व अच्छा माहौल मिले तो वो दिन दुर नहीं कि देवभोग कि धरा के छात्र छात्राएं भी बड़े

बड़े पद मे आसीन होते नजर आयेंगे। दीपिका बघेल ने कहा कानून व्यवस्था एक ऐसा शब्द है जो आये दिन खबरों के माध्यम से आप सुनते और पढ़ते हैं, यह शब्द केवल खबरों के लिहाज से ही नहीं बल्कि सामाजिक तौर पर भी महत्वपूर्ण है, बेहतर कानून व्यवस्था अच्छे समाज और माहौल का निर्माण करती है, किसी भी राज्य, शहर, अथवा क्षेत्र में शांति बनाए रखना, अपराधों को कम करना और नागरिकों को सुरक्षा प्रदान करना होता है। इसका उद्देश्य अपराधों का निवारण करना और इनके लिए दंड देना है क्योंकि सभ्य समाजों में अपराध को व्यक्ति के विरूद्ध गलत कृत्य नहीं माना जाता बल्कि समाज के विरुद्ध गलत कार्य माना जाता है। कानून की यह शाखा नागरिकों के एक-दूसरे के साथ आपसी संबंधों को विनियमित तथा शासित करता है। दीपिका बघेल के के इस उपलब्धि से समाज व क्षेत्र में हर्ष का महौल है साथ ही साथ दीपिका बघेल देवभोग के युवा वर्ग के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बनती दिख रही है।

भाजपा मंडल गोहरापदर की बैठक संपन्न,संगठन की मजबूती को लेकर हुई चर्चा

संवाददाता हेमचंद नागेश

गोहरापदर भारतीय जनता पार्टी मंडल गोहरापदर के प्रत्येक माह की होने वाली मंडल की मासिक बैठक इस माह गुरजीभाटा (अ) में संपन्न हुई. बैठक में प्रमुख रूप से संगठन द्वारा चलाए जा रहे ÷मोर आवास मोर अधिकार÷एवं ÷अपना बूथ सबसे मजबूत÷कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की समीक्षा की गई एवं इन कार्यक्रमों को जल्द से जल्द पूर्ण करने का आग्रह किया गया.पार्टी की मजबूती के लिए विशेष चर्चा की गई। इस दौरान बैठक को संबोधित करते हुए पूर्व संसदीय सचिव गोवर्धन सिंह मांझी ने कहा कि अब हमें कमरकस लेने का वक्त आ गया है चुनाव बहुत नजदीक है और संगठन की असली परीक्षा यही से शुरू होनी है.पार्टी द्वारा दिए जा रहे कार्यक्रमों समय से पूर्व सुनिश्चित करना हम सभी का दायित्व बनता है.सभी

कार्यकर्ता पूरी मजबूती के साथ हर विषय पर गंभीरता रखते हुए कार्यक्रमों को संपन्न करायें।भाजपा मंडल अध्यक्ष गुरुनारायण तिवारी ने कहा कि हम सभी कार्यकर्ता संगठन सर्वोपरि विचारधारा को लेकर चलने वाले हैं.इसलिए हमें पार्टी संगठन द्वारा दिए हुए सारे कार्यों का एकजुट होकर अक्षरशः पालन करना होगा. 2023 के विधानसभा चुनाव में भाजपा को प्रचंड विजय दिलाने के लिए प्रत्येक बूथ में अधिक से अधिक कार्य करें।बैठक में प्रमुख रूप से जिला महामंत्री पुनितराम सिन्हा, सांसद प्रतिनिधि खगेश्वर नायक,मंडल महामंत्री द्वय तानसिंह मांझी,मोहित यादव,उपाध्यक्ष आनंद यादव,कोषाध्यक्ष शोभितराम ध्रुवा,मंत्री उग्रसेन साहू,जनपद सदस्य पलाकराम पटेल,लम्बोदर साहू,खुदेश्वर यादव,चंद्रप्रकाश साहू,अनिल अग्रवाल,भुवनेश्वर मांझी, दुबेराम ध्रुवा,दीपक सागर,पुस्तम यादव,डोमार कश्यप,धनीराम सिन्हा,गौरीशंकर यादव,गोवर्धन साहू,परस कौशिक,हेमराज मांझी,चितेश्वर यादव,उपेन्द्र नेताम,रघुनाथ पूंजी सहित कार्यकर्ता गण उपस्थित रहे।

विकासखंड स्तर पर राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम कि सफल क्रियान्वयन....

संवाददाता प्रमेश अवस्थी

देवभोग न्यज.।छत्तीसगड

शासन स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के निर्देश पर जिला प्रशासन के अनुरूप प्रत्येक विकासखंड में (राष्ट्रिय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम) चिरायु दल का गठन किया गया है द्घ उक्त निर्देश के अनुपालन में विकासखंड देवभोग में चिरायु दल का संचालन लगातर किया जा रहा है।उक्त चिरायु दल द्वारा विकासखंड के सभी सरकारी स्कूलों एवं आंगनबा?ी केंद्रो में जाकर 0 से लेकर 18 वर्षो तक के सभी बच्चो का स्वास्थ्य परिक्षण किया जाता है द्घ विकासखंड देवभोग के खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ.सुनील कुमार रेड्डी के कुशल मार्गदर्शन के निरंतर प्रयास और चिराय दल के चिकित्सा अधिकारी डॉ. सूर्यकांत साहू फार्मासिस्ट महेंद्र साहू एवं हरी साहू,ए.एन.एम. मंजू पटेल और विकासखंड के विकासखंड कार्यक्रम प्रबंधक श्री तुजेंद्र कुमार दीवान के निरंतर प्रयास से विकासखंड में कार्यक्रम का सफलतापूर्वक क्रियान्वन किया जा रहा हैचिरायु दल द्वारा आंगनबा?ी केन्द्र चिन्गराभाठा एवं कुर्लापारा में स्वास्थ्य परिक्षण के दौरान योगेन्द्री सोरी एवं गौरवी निधि को जन्मजात हृदय रोग के रूप में चिन्हाकित किया गया द्घ माननीय मुख्यमंत्री महोदय के निर्देश प्राप्त होने तथा कलेक्टर महोदय के तत्काल इलाज सुनिश्चित कराने के निर्देश पर देवभोग से बी.एम.ओ. डॉ. सुनील कुमार रेड्डी के नेतृत्व में डॉ. तनिषा धनेलिया एवं आरबीएसके दल के सदस्यों द्वारा ग्राम में पहुंचकर योगेन्द्री सोरी एवं गौरवी निधि के परिवारजन को बीमारी के बारे में समझाया गया तथा परिजनों की सहमती उपरांत रायपुर में स्थित हनारायणा हॉस्पिटल ले जाकर हृदय रोग का ऑपरेशन कराकर सकुशल उन्हें घर पहुँचाया गया योगेन्द्री सोरी एवं गौरवी निधि कि ऑपरेशन पश्चात् सकुशल घर वापसी

युवा पत्रकार कल्याण संघ ने पुलिस अधीक्षक का पुष्पगुच्छ एवं तुलसी,जामुन पौधे देकर स्वागत किया

पुष्पांजली टुडे

दमोह। दमोह के युवा पत्रकार कल्याण संघ ने नवागत पुलिस अधीक्षक राकेश सिंह का पुष्पगुच्छ एवं तुलसी , जामुन पौधे देकर स्वागत किया। पुलिस अधीक्षक महोदय से परिचय उपरांत युवा पत्रकार कल्याण संघ के 7 जनवरी को होने वाले पत्रकार सम्मान समारोह के विषय मे चर्चा कर कार्यक्रम में आने का आमंत्रण दिया।पुलिस अधीक्षक महोदय ने संघ साथियों का उचित सहयोग कि बात की।इस अवसर पर संघ के अध्यक्ष अमोल पटेल , प्रमुख उमर खैय्याम जिला अध्यक्ष संदीप पाठक नगर अध्यक्ष तनुज पाराशर , जमना चौबे , रीतेश अवस्थी,अनुराग बजाज , राजकुमार सेन , लवी दुबे , शिवम दुबे , नितेश सिंह ठाकुर , मुश्ताक खान सहित सभी साथियों की उपस्थिति रही । दमोह पुलिस अधीक्षक राकेश सिंह ने पत्रकारों के सहयोग से दमोह में अपराधों में अंकुश लगाने की बात कही।

शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ मतदान

पुष्पांजली टुडे

दमोह। जिले में स्थानीय निकाय के तहत पंचायत चुनाव में पंच पद के उपचुनाव के तहत पटेरा तहसील की 10 ग्राम पंचायत में 14 वार्डो के पंच पद के चुनाव शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुए। इसमें जिला निर्वाचन अधिकारी कलेक्टर एस कृष्ण चैतन्य के मार्ग निर्देशन में पटेरा तहसील कि दस ग्राम पंचायतों में तहसीलदार जानकी उईके एवं नायब तहसीलदार श्रीमती वर्षा दुबे द्वारा सभी मतदान केंद्रों का निरीक्षण किया और शांतिपूर्ण ढंग से मतदान हेतु निर्देशित किया गया। कहीं पर किसी भी प्रकार की कोई परेशानियां या दिक्कत

किसी भी मतदान केंद्र पर दिखाई नहीं दी। सभी ग्राम पंचायतों में पंच पद के 2-2 प्रत्याशी चुनाव मैदान में हैं।

सबलगढ़ किला को संरक्षित रखने के लिए क्षत्रिय महासभा ने न पा सीएमओ को दिया ज्ञापन

सबलगढ़ - सबलगढ़ अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ब्लॉक इकाई सबलग? के अध्यक्ष अरविंद सिंह जादौन के द्वारा जिलाध्यक्ष महेन्द्र सिंह सिकरवार के नेतृत्व में सबलग? के प्राचीन किले से अतिक्रमण हटाये जाने हेतु एक ज्ञापन नगरपालिका सीएमओ योगेंद्र सिंह तोमर को दिया। जिसमें जिलाध्यक्ष सिकरवार द्वारा नगरपालिका पर यह आरोप लगाए हैं कि सबलग? का किला क्षत्रियों की विरासत है जो कि पुरातत्व की संरक्षित स्मारक है। उक्त किले में नगरपालिका द्वारा शासन की आवास योजना के अंतर्गत बिना किसी स्वामित्व की भूमि के पुरातत्व की भूमि पर लाखों रुपये का लेनदेन कर आवास के नाम पर अतिक्रमण कराया गया है। उक्त किला 18 वी शताब्दी का राजस्थानी शैली में बनाया गया क्षत्रिय विरासत का बेहतरीन उदाहरण है।इस विरासत को बचाने के लिए क्षत्रिय महासभा ने संकल्प लिया है ।अभी हम ज्ञापन के माध्यम से शासन प्रशासन का ध्यान आकर्षित करा रहे हैं। यदि शीघ्र ही किले से अतिक्रमण नहीं हटाया गया ।तो क्षत्रिय महासभा उग्र आंदोलन करेगी। ज्ञापन देते समय क्षत्रिय महासभा के जिला अध्यक्ष महेंद्र सिंह सिकरवार कार्यकारी जिला अध्यक्ष उम्मेद सिंह जादौन अटार, प्रदेश उपाध्यक्ष पूर्व प्राचार्य गणेश पाल सिंह जादौन प्रदेश उपाध्यक्ष रामदीन सिंह जादौन जिला उपाध्यक्ष जय कुमार सिंह कोषाध्यक्ष नरेश कुमार सिंह जादौन ग्रामीण अध्यक्ष कुलेंद्र तोमर ब्लॉक अध्यक्ष अरविंद सिंह जादौन उर्फ अन्नू एवं मीडिया प्रभारी राज बहादुर सिंह जादौन उपस्थित रहे।सीएमओ योगेंद्र सिंह तोमर का कहना क्षत्रिय महासभा द्वारा ज्ञापन प्राप्त हुआ है मौके पर पहुंचकर जांच की जाएगी जांच उपरांत जो भी होगा।

नव जागृति शाला ने नानी खोसला ट्राफी पर किया कब्जा

पुष्पांजली टुडे

दमोह।जिला फुटबॉल संघ द्वारा संचालित अंतर शालेय फुटबॉल प्रतियोगिता का समापन स्थानीय एक्सीलेंस स्कूल मैदान पर आयोजित किया गया।जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में दमोह विधायक अजय टंडन,अध्यक्षता अनवर उस्ताद के आतिथ्य में आयोजित हुई।प्रतियोगिता में मैच सेंट नॉरबिट एवं नव जागृति स्कूल के मध्य खेला गया जिसमें नव जागृति स्कूल ने 2-0 से विजय प्राप्त की। इस मौके पर दमोह विधायक अजय टंडन के द्वारा नानी खोसला के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की एवं उनके जीवन पर्यंत पर प्रकाश डाला तो वही अनवर उस्ताद के द्वारा खिलाड़ियों को प्रोत्साहित किया गया। इस अवसर पर कपिल खरे हरिशंकर यादव, भगवान सिंह, राजीव खोसला, राजेश सालोमन,फैयाज खान, बीडी शर्मा, तरुण नामदेव,विपिन राम,फिरोज खान जुबेर, दीपक रैकवार,प्रदीप अहिरवार की मौजूदगी रही। कार्यक्रम का संचालन मध्य प्रदेश कोषाध्यक्ष ललित नायक के द्वारा किया गया।

मुक्तिधाम ना होने से स्कूल प्रांगण में होते है दाह संस्कार

बच्चों ने बताया आग को देखकर लगता है डर, सरकार कि योजनाओं की पोल खोलता शहर से सटा एक गाँव

ब्यूरो रिपोर्ट रीतेश अवस्थी
पुष्पांजली टुडे

दमोह। दमोह विकासखंड के ग्राम पंचायत लुहर्रा के ग्राम सुर्खी में शमशान घाट न होने के कारण प्राथमिक शाला के ग्राउंड में दाह संस्कार होने का मामला संज्ञान में आया है जहाँ पर मृतक कि अंत्येष्टि स्कूल परिसर में हो रही है ।जिस कारण यहाँ आने वाले स्कूली बच्चों में चिता को देखकर भय का माहौल बना रहता है और वो स्कूल जाने से डरतें है देखने में आया है कि बड़ी संख्या में लोग शव को लेकर स्कूल परिसर पहुंचते है एवं स्कूल कि बिल्डिंग के ठीक सामने शव को अंत्येष्टि देते है। मानवता को शर्मसार करने वाली तस्वीरें है जहाँ एक व्यक्ति कि मौत हो जाने के बाद उसके अंतिम संस्कार के लिए मुक्तिधाम तक नसीब नहीं हुआ है जिसके चलते परिजनों को स्कूल के अंदर ही उसका अंतिम संस्कार करना पड़ा। ग्रामीणों एवं वर्तमान सरपंच द्वारा बताया गया कि आज तक गांव में मृतकों को जलाने के लिए एक भी शांतिधाम नहीं बनाया गया। इस मामले में पुष्पांजली कि टीम ने जब ग्रामीण लुहर्रा पंचायत के पूर्व सरपंच से बात कि तो उन्होंने बताया कि शासकीय भूमि उपलब्ध ना होने के कारण आज तक यहाँ मुक्तिधाम का निर्माण नहीं करा सका क्योंकि अगर निजी जमीनों पर मुक्तिधाम

स्कूल परिसर में दाह संस्कार करते ग्रामीण

बनाता तो कई लोगों को इस पर आपत्ति होती। उन्होंने यह भी बताया कि इन आसपास के गांव के जितने भी लम्बरदार लोग है उनके दाह संस्कार निजी भूमि पर हो जाते है पर ग्रामीणों के लिए यहाँ अलग से मुक्तिधाम कि सुविधा नहीं है जिस कारण सभी को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। जबकि वर्तमान सरपंच महेश उपाध्याय से हम लोगों ने बात कि तो उन्होंने बताया कि लुहर्रा पंचायत के सभी ग्रामों जिसमें सुर्खी ,उमरिया ,लुहर्रा भौरखेड़ा में एक सी स्थिति हमेशा से बनी हुई है।आज तक किसी ने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया।यहाँ के किसी भी गांव में शमशान घाट नही है।आपके अड़बार के माध्यम से हम कहना चाहते है कि जैसे ही जनपद या जिला से इसके लिए पंचायत को राशि प्रदान

स्कूल परिसर में एकत्रित लोग

करती है तो हम सभी ग्रामवासी मिलकर समस्त ग्रामों में उचित स्थान पर शमशान बनाने में प्राथमिकता से जोर देंगे और निर्माण करवाएंगे।

मूलभूत सुविधाओं के लिए तरस रहा गांव- मध्यप्रदेश सरकार ग्रामीण इलाकों को विकसित कराने के लिए हर साल करोड़ो रूपये खर्च करती है, मनरेगा जैसी योजनाएं गांव के विकास और ग्रामीणों कि सुविधाये उपलब्ध कराने का काम करती है लेकिन दमोह जिले का यह गांव आज भी मूलभूत जरूरतों के लिए जद्दोजहद कर रहा है।

किसी ने भी मुक्तिधाम बनवाने का प्रयास नहीं किया-गांव में वर्षो से मुक्तिधाम कि दरकार है लेकिन किसी जिम्मेदार ने आज तक मुक्तिधाम बनवाने का प्रयास तक नहीं किया है लिहाजा स्थानीय लोग मृतकों का अंतिम संस्कार गांव के स्कूल के अंदर करते है जिसकी तस्वीर हम आपको अपने अड़बार के माध्यम से दिखा रहे है जो हमें प्राप्त हुयी है।

अधिकारियों से लगाई गुहार लेकिन कोई सुनवाई नही-ग्रामीणों द्वारा बताया गया कि कई बार इस सम्बन्ध में सबंधित अधिकारियों, सरपंच, सचिवों से गुहार लगाई है लेकिन किसी के इस सुनवाई का हल नहीं निकाला जा सका है उसका खामियाजा यहाँ निवास करने वाले ग्रामीणों को भुगतना पड़ रहा है क्योंकि अंतिम संस्कार के लिए यहाँ एक भी मुक्तिधाम नहीं है जो बड़े शर्म कि बात है।

योजनाओं कि पोल खोलता गांव-प्रदेश के हर कोने में अपनी योजनाओं का लाभ दिलाने वाली मध्यप्रदेश सरकार कि यह पोल खुलते दिख रही है जो बड़ा बड़ा दावा करती है विकास को लेकर और सरकार कि इन्ही सब खामियों कि वजह से ग्रामीणों को इतनी भयाभय स्थिति से गुजरना पड़ रहा है।

राहुल की राजस्थान में पैदल यात्रा में साथ चलने पर कार्यकर्ताओ द्वारा रामदेवी बावरी का सम्मान

भारत जोडो यात्रा में सक्रिय भूमिका निभाने पर राजस्थान बावरी समाज विकास संस्था व कार्यकर्ताओं द्वारा बावरी का किया सम्मान

पुष्पांजली टुडे संवाददाता पाली राजस्थान
अनूपगढ़ गंगानगर राजस्थान

कांग्रेस नेता राहुल गांधी की राजस्थान में 17 दिन तक भारत जोड़ों यात्रा राजस्थान में रही। इस दौरान अनूपगढ़ में हुए एक कार्यक्रम के दौरान अनूपगढ़ की महिला कांग्रेस नेत्री व पंचायत समिति सदस्य रामदेवी बावरी का राजस्थान बावरी समाज विकास संस्था के जिलाध्यक्ष रामकुमार राठौड़ के नेतृत्व में संस्था ने सम्मान किया। राहुल की पैदल यात्रा में बावरी 17 दिन तक राजस्थान में नियमित रूप से पैदल यात्रा में शामिल रही। इस मौके पर प्रदेश सचिव हनुमान भाटी जी,प्रदेश संगठन मंत्री लालचंद भाटी,कृष्ण चौहान,पूर्व जिलाध्यक्ष गुरमीत सिंह चौहान जी,पूर्व जिलाध्यक्ष रामजी लाल चौहान,जिला उपाध्यक्ष व सरपंच प्रतिनिधि मेघराज ,प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य गुरमेल सिंह,अनूपगढ़ तहसील अध्यक्ष भैराराम बावरी ,उपाध्यक्ष जरनैल सिंह जी,घड़साना तहसील अध्यक्ष मास्टर आनंद कुमार ,जिला प्रतिनिधि पूर्णराम धांधल व पूर्व तहसील अध्यक्ष श्रीगंगानगर जगदीश भाटी सहित संस्था से जुड़े जनप्रतिनधि शामिल हुए।

आनंद उत्सव का आयोजन 14 से 28 जनवरी तक

आनंद उत्सव की रूपरेखा एवं कार्यक्रमों के पर्यवेक्षण हेतु जिला स्तरीय समिति का गठन

दैनिक पुष्पांजली टुडे भिण्ड । आनंद विभाग के निर्देश के पालन में ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में आनंद उत्सव 2023 का आयोजन 14 जनवरी से 28 जनवरी 2023 के मध्य किया जाएगा।कलेक्टर डॉ सतीश कुमार एस ने जिले में आयोजित किये जाने वाले आनंद उत्सव की रूपरेखा निर्धारित करने तथा कार्यक्रमों के पर्यवेक्षण के लिए जिला स्तरीय समिति का गठन किया है। गठित समिति में कलेक्टर अध्यक्ष होंगे। पुलिस अधीक्षक, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत, मुख्य नगर पालिका अधिकारी नगर पालिका परिषद भिण्ड सदस्य रहेंगे। जिला नोडल अधिकारी आनंद विभाग को सदस्य/सचिव बनाया गया है। साथ ही अनुविभागीय अधिकारी राजस्व भिण्ड, उप संचालक शहरी विकास अभिकरण, जिला खेल और युवा कल्याण अधिकारी, जिला समन्वयक आनंद विभाग, प्रशांत भदौरिया मास्टर ट्रेनर्स आनंद विभाग, सुश्री अनुराधा शर्मा आनंदम सहयोगी, जिला युवा अधिकारी नेहरू युवा केन्द्र, जिला समन्वयक म.प्र.जन अभियान परिषद, जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग, उप संचालक सामाजिक न्याय एवं निःशक्तजन कल्याण विभाग एवं उप संचालक जनसंपर्क विभाग को सदस्य नियुक्त किया गया है।

राजस्थान सीनियर वनडे रणजी केम्प में उषा सीरवी का चयन

पुष्पांजली टुडे। संवाददाता
नरेश कुमार सिरवी । पाली राजस्थान
राजस्थान/जयपुर
सीरवी समाज की गौरव व रत्न

होनहार युवा प्रतिभाशाली व महिला क्रिकेटर (ऑल राउंडर)उषा परिहारिया सुपुत्री अचलाराम सीरवी। मूलनिवासी/बिलावास,तहसील सोजत पाली का राजस्थान सीनियर (वनडे) एकदिवसीय रणजी कैम्प के सम्भावित खिला?ियों की सूची में चयन हुआ।इसके पहले दो बार राजस्थान अंडर19 महिला क्रिकेट टीम व चैलेंजर्स ट्राफी खेल चुकी है।इस चयन पर पाली जिला खेल प्रमुख धर्मवीर सिंह जी व आर सी ए के सभी सम्मानित सदस्य गणों व कोच ,मैनेजमेंट को बहुत बहुत धन्यवाद व आभार।सभी सहयोग कर्ताओं को भी हार्दिक आभार। इस उपलब्धि पर बेटी उषा सीरवी को चेत-बंदे पत्रिका परिवार/सीरवी समाज डॉट कॉम/राष्टीय सीरवी किसान सेवा समिति व अखिल भारतीय सीरवी समाज की तरफ से बहुत बहुत हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।। हमारे लिए गर्व व खुशी का पल है।

आंगनवाड़ी केंद्रों में रविवार 08 जनवरी तक रहेगा अवकाश

रितेश कटरे ब्युरो चीफ पुष्पांजलि टुडे बालाघाट

बालाघाट जिले में इन दिनों पड रही अधिक ठंड एवं शीतलहर के कारण आंगनवाड़ी केंद्रों के बच्चों को किसी तरह की स्वास्थ्य संबंधी समस्या ना हो इसे दृष्टिगत रखते हुए कलेक्टर डॉ गिरीश कुमार मिश्रा ने जिले के सभी आंगनवाड़ी केंद्रों में बच्चों के लिए रविवार 8 जनवरी 2023 तक अवकाश घोषित किया है। यह अवकाश केवल आंगनवाड़ी केंद्रों के बच्चों के लिए है। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिका केंद्र पर आकर सामान्य दिनों की तरह कार्य करते रहेंगी। यह आदेश तत्काल प्रभावी हो गया है।

पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के आह्वान पर मध्य प्रदेश के प्रत्येक जिले और ब्लॉक में आज संकल्प यात्रा का आयोजन किया जा रहा है

मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के आह्वान पर आज क्षेत्रीय विधायक बैजनाथ सिंह कुशवाहा और ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के तत्वधान में कांग्रेस कमेटी कार्यालय सबलगढ़ गांधी पार्क में दोपहर 12ः00 संकल्प सभा का आयोजन हुआ जिसमें ब्लॉक सबलगढ़ के अधिकांश कांग्रेसी शामिल हुए अपनी संकल्प सभा में विधायक बैजनाथ सिंह कुशवाहा ने कहा प्रदेश अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के आह्वान पर मध्य प्रदेश के प्रत्येक जिले और ब्लॉक में आज संकल्प यात्रा का आयोजन किया जा रहा है जिसमें हम सभी कांग्रेसी जन नए साल में सरकार बदलने का संकल्प लेते हैं भाजपा सरकार में मध्य प्रदेश की हालत लगातार बद से बदतर होती जा रही है मध्यप्रदेश में जहां उद्योग धंधे बंद हो रहे हैं छोटा व्यापारी भाजपा की नीतियों से परेशान है युवा आत्महत्या कर रहे हैं किसान को उसकी फसल का उचित मूल्य नहीं मिल रहा है

अजब गजब कारनामा मनेरी धान खरीदी केंद्र का धान निजी राइस मिल में कौन लाया कैसे आया , कौन कौन है इस खेल में शामिल की जांच में जुटा प्रशासन

रितेश कटरे ब्युरो चीफ पुष्पांजलि टुडे बालाघाट

लांजी क्षेत्र के समस्त धान खरीदी केन्द्रो में धान की खरीदी जारी है, जहां हजारो लाखो क्रिटंल धान की खरीदी की जा रही है, इन्ही खरीदी केन्द्रो मे एक धान खरीदी केन्द्र है मनेरी जो हमेशा से ही धान खरीदी के मामले मे सुर्खियो मे बना रहता कोई ना कोई गडबडी इस धान खरीदी केन्द्र मे हमेशा से होती आई है जिसमे प्रकरण समाचार पत्रो में भी प्रकाशित हुये है अब इस धान खरीदी केन्द्र में 16 कट्टे धान से भरे हुये चोरी होने का प्रकरण सामने आया है जिस संबध में लांजी एसडीएम ज्योति ठाकुर एवं जांच दल भी घटना की संज्ञान लेने के लिये मौका स्थल पर पंहुचा था।

माँ संतोषी राईस मिल मे मिले चोरी हुये धान के बोरे, 16 कट्टे जप्त-इस संपूर्ण प्रकरण में ग्राम के ग्रामीणो की सूझबूझ सामने आई है जिनके द्वारा जवाबदार नागरिक का परिचय देते हुये यह बताया की मनेरी की संतोषी राईस मिल मे मनेरी धान खरीदी केन्द्र के पर्चे लेबल लगे हुये धान के कट्टे रखे हुये है जो कि किसान के द्वारा केन्द्रो मे बेचे जाते है, किसानो से खरीदी करने के बाद केन्द्र के द्वारा इन कट्टो को तौल कर परिवहन के लिये रखा जाता है, जिनमे से 16 धान के कट्टें जो कि बारिक धान बताया जा रहा है एक कट्टे में 40 किलो धान रहता है इस अनुसार 640 किलो धान 4 जनवरी को चोरी होते है और मनेरी की ही माँ संतोषी राईस मिल में रखे जाते है, 5 जनवरी को उक्त धान के कट्टो के बारे मे जानकारी लगती है जिसमे ग्रामीणो की सूझबूझ की वे तत्काल पत्रकारो एवं अधिकारियो से संपर्क करते है जिस अधिकारियो के द्वारा उक्त प्रकरण को तत्काल संज्ञान मे लेकर मॉ संतोषी राईस मिल मनेरी पंहुचते है जांच दल में नापतौल इन्सपेक्टर आर के कछ्वाहा, खाद्य निरीक्षक निहारिका अवस्थी, मंडी निरीक्षक आकाश ठाकुर उक्त राईस में पंहुचकर धान से भर 16 बोरो की जांच करते है और पाया जाता है कि यह 16 कट्टे मनेरी धान खरीदी केन्द्र है जिसमे मनेरी केन्द्र का पर्चा भी लगा हुआ है उक्ताश

की जानकारी लांजी एसडीएम ज्याति ठाकुर को भी प्राप्त होती है जो कि माँ संतोषी राईस मिल पंहुचकर निरीक्षण करती है, जांच दल को संपूर्ण कार्यवाही के लिये निर्देशित किया जाता है तत्पश्चात समस्त जांच दल जिनमे एसडीएम ज्योति ठाकुर एवं उक्त जांच दल पंचनामा कार्यवाही कर सभी 16 कट्टो को जप्त कर मॉ वेयर हाऊस में सूपुर्द किया गया है। तथा अग्रिम कार्यवाही हेतु मनेरी धान खरीदी केन्द्र पंहुचकर आवश्यक कार्यवाही दस्तावेज परीक्षण मे बयान दर्ज किये गये है।

शासन की धान संतोषी राईस मिल मे मिली है, संपूर्ण प्रकरण की जांच की जा रही- आर के कछ्वाहा उक्त 16 बोरे धान चोरी के प्रकरण में जांच दल अधिकारी नापतौल इन्सपेक्टर आर के कछ्वाहा से चर्चा की गई तो आपने बताया की हम लोग जिलाध्यक्ष महोदय के निर्देशन में एक जांच मे मनेरी धान खरीदी केन्द्र आये हुये थे हम अचानक एक सूचना

प्राप्त हुई की संतोष राईस मिल में कुछ धान जो कि मनेरी केन्द्र मे खरीदी हुई थी वह मिल मे रखी हुई है फिर हम लोग तुरंत मिल गये तो देखा की 16 कट्टे जिनमे 40 किलो की भर्ती थी 640 किलो धान मिल मे रखी हुई पाई गई मनेरी केन्द्र की थी जब इस संबंध मे माँ संतोषी राईस मिल के मालिक से बात की गई तो उनका यह कहना है कि यह धान कौन रख गया है या कब रख गया है हमको नही मालूम,ख्इस बाबत हमने संज्ञान मे लेकर पूरी कार्यवाही की धान जप्त कर वेयर हाऊस मे भेजा गया है यह सारा मामला हमने जिलाध्यक्ष महोदय के संज्ञान मे ला दिया है, यंहा एसडीएम लांजी भी कार्यवाही की दौरान उपस्थित रही है और आगे की कार्यवाही नियमानुसार की जावेगी। प्रथम दृष्ट्या अभी चोरी हुई है या और कोई बात है यह समझ नही आया है लेकिन जब तक राईस मिल का मालिक यह नही बता पायेगा की धान उनके पास आई कैसे तब इसके निष्कर्ष मे हम पंहुच पायेंगे। वंही यह संभावना भी व्यक्त की गई है की यहां से माल चोरी हो सकता है इतने बडे परिसर मे चौकीदारो के द्वारा चौकीदारी की जा रही है संभवानाऐं कुछ भी हो सकती है इसके अलावा स्टॉक की जांच की जायेगी।

मनेरी धान खरीदी केन्द्र के ही है 16 कट्टे धान- एम एल नगपुरे-मनेरी धान खरीदी केन्द्र के प्रबंधक एम एल नगपुरे से उक्त विषय मे चर्चा की गई तो आपने बताया की माँ संतोषी राईस मिल मे जो धान से भरे हुये 16 बोरे जप्त किये गये है वह मनेरी केन्द्र के ही है, मुझे अधिकारियो के द्वारा ही सूचना प्राप्त हुई थी, धान कब चोरी हुई कैसे चोरी हुई यह नही पता, जांच दल के द्वारा इस संबंध मे जांच की जा रही है, धान का स्टाक कितना है यह केन्द्र प्रभारी ही बता सकता है जो कि विलास चौरे है, मनेरी धान खरीदी केन्द्र मे अब तक 27 हजार क्रिंटल धान की खरीदी हुई है जिसमे से लगभग 24 हजार क्रिंटल धान का परिवहन हो चुका है, वर्तमान मे बारिश को देखते हुये धान की खरीदी बंद है, बाकि स्टाक केन्द्र मे है जहां से चोरी की संभावनाऐं है।

और भी धान के बोरे हुये होंगे गायब-विगत माह से धान की खरीदी की जा रही है जंहा लगभग 27 हजार क्रिंटल धान खरीदी किया जा चुका है यदि 5 जनवरी को 16 बोरे धान चोरी हुई बरामद होता है तो यह भी पूर्ण रूप से संभावना है कि और भी धान की चोरी हुई होगी लेकिन 5 जनवरी को चोरी पकड मे आ गई, सीधे तौर पर यदि स्टॉक मिलाया जाता है और धान के बोरे कम निकलते है तो वह चोरी हुये होंगे, मतलब पहले भी धान के बोरे गायब हुये है यह सभी बाते स्टाक मिलान के बाद सामने आ सकती है।

बालाघाट जिले के सभी 30 मतदान केंद्रों पर शांतिपूर्वक संपन्न हुआ पंचायत चुनाव

9 जनवरी को होगी सरपंच के लिए मतों की गणना

रितेश कटरे ब्युरो चीफ पुष्पांजलि टुडे बालाघाट

बालाघाट जिले के 4 ग्राम पंचायतों उकवा, बोलेगांव, बेनेगांव एवं सिरेगांव में सरपंच तथा 29 वार्डों में पंचो के निर्वाचन के लिए मतदान कराया गया। जिले के सभी 30 मतदान केंद्रों पर शांतिपूर्ण मतदान संपन्न हो गया और मतदान दल मतदान करा कर वापस लौट गए हैं।सभी 06 जनपद पंचायत के 30 मतदान दल जनपद मुख्यालय सकुशल पहुंच गए हैं और मतपेटियों,ईव्हीएम मतदान सामग्री जमा कर चुके हैं। लांजी जनपद की ग्राम पंचायत बोलेगांव, बेनेगांव एवं सिरेगांव के सरपंच के निर्वाचन की इवीएम स्ट्रांग रूम लांजी में तथा जनपद पंचायत परसवाडा की ग्राम पंचायत उकवा के सरपंच निर्वाचन की इवीएम मशीन को जनपद पंचायत परसवाडा के स्ट्रांग रूम में जमा की जा चुकी हैं, जनपद पंचायत किरनापुर, लांजी, कटंगी, लालबर्रा, बिरसा व परसवाडा कुल 06 जनपद पंचायत के 29 वार्डो के पंच निर्वाचन की मतगणना निर्वाचन समाप्ति के पश्चात्य पूरी हो चुकी है। सरपंच पद के निर्वाचन की मतगणना इवीएम से 09 जनवरी 2023 को खंड मुख्यालय पर की जायेगी। मतदान दलों से मतदान सामग्री प्राप्त कर स्ट्रांग रूम में रखकर सीलिंग कर दी गई जनपद पंचायत परसवाड़ा सभी वाहनों को रवानगी भी करा दी गई अपने गंतव्य स्थान के लिए और सभी मतदान दल भी अपने गंतव्य स्थान के लिए रवाना हो चुके हैं

तीन दिवसीय बाल आनंद महोत्सव का आयोजन

।मुरैना - एसपी ने बच्चों को दिए अध्यापन कार्य मैं सफलता के टिप्स ऋशर तीन दिवसीय बाल आनंद महोत्सव प्रारंभ जोरा प्रसिद्ध सर्वोदय कार्यकर्ता समाजसेवी महात्मा गांधी सेवा आश्रम के संस्थापक स्वर्गीय भाई जी डॉक्टर एसएन सुबाराव जी की स्मृति में गुरुवार से प्रारंभ हुए तीन दिवसीय बाल आनंद महोत्सव में बतौर मुख्य अतिथि पधारे जिले के पुलिस अधीक्षक आशुतोष बागरी ने बच्चों को अध्यापन कार्य में सफलता के लिए टिप्स दिए 29 दिसंबर को बाल आनंद महोत्सव के उद्घाटन के अवसर पर मुख्य अतिथि की आसंदी से बच्चों को संबोधित करते हुए पुलिस अधीक्षक आशुतोष बागरी में कहा कि परीक्षाओं से पहले सफल होने के लिए आप किस तरह की तैयारियां करते हैं जो याद करके जाते हैं क्या उसे भूल भी जाते हैं इस पर कई बच्चों ने भोलेपन से कहा कि हां भूल जाते हैं कुछ याद रहता है कुछ याद नहीं रहता है इस पर एसपी ने कहा कि रात को सोने से पहले आप अच्छी तरह से पढ़ाई करके सोया करेगी को आपको परीक्षाओं में सब कुछ याद रहेगा कुछ भी भूलेंगे नहीं पुलिस अधीक्षक बागरी ने बच्चों को समझाते हुए यह भी कहा कि नोट बनाकर पड़े

क्षेत्र में जो भी काम हो गुणवत्ता के साथ हों – हिना कावरे विधायक

पूर्वाटोला- सलंगटोला- खांडाफरी मार्ग का विधायक सुश्री कावरे ने किया भूमिपूजन

रितेश कटरे ब्युरो चीफ पुष्पांजलि टुडे बालाघाट

भारत को मिली आजादी के 76 वर्ष बित जाने के बाद भी क्षेत्र अपनी बदहाली का रोना रो रहा है। पक्की सड़क के लिए अनेक ऐसे गांव हैं जो अभी भी पक्की सड़क से कोसों दूर है। इन्हीं गांवों को पक्की सड़क से जोड़ने ग्राम पूर्वाटोला सलंगटोला खाण्डाफरी मार्ग जो कि अत्यंत जर्जर हो चुका था, जिससे कि राहगीरों को खासी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। को द्रष्टिगत रखते हुए उक्त मार्ग जिसकी दूरी 3.32 कि.मी. है। इसे योजना मद से प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान की गई है। इस स्वीकृत मार्ग के लिए 285. 88 लाख रुपए की राशि स्वीकृत की गई है ? जिसका भूमिपूजन विधायक सुश्री हिना कावरे के हस्ते किया गया। भूमि पूजन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सुश्री हिना लिखीराम कावरे विधायक लांजी पूर्व उपाध्यक्ष म.प्र. विधानसभा, श्रीमति अर्चना रेवेन्द्र खोंगल अध्यक्ष जनपद पंचायत लांजी, अजय अवसरे उपाध्यक्ष जनपद पंचायत लांजी, देवेंद्र खोंगल पूर्व अध्यक्ष जनपद पंचायत लांजी, ओमकार बाबा रहांगडाले अध्यक्ष ब्लाक कांग्रेस कमेटी लांजी, प्रमोद अग्रवाल अध्यक्ष शहर कांग्रेस कमेटी लांजी, श्रीमती ममता दुबे अध्यक्ष महिला शहर कांग्रेस कमेटी लांजी, श्रीमती मनीषा धारणे पूर्व सदस्य जिला पंचायत, दिनेश लाडे सभापति निर्माण समिति, रेवाजी करहाटकरे, अमित घोघड़े पुर्व जनपद सदस्य के करकमलों से इन सभी की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। भूमि पूजन कार्यक्रम दोपहर 2 बजे ग्राम पंचायत पूर्वाटोला में संपन्न होगा। जहां सर्वप्रथम पुर्वाटोला के वार्ड नंबर 6 में पक्की नाली निर्माण हेतु भूमिपूजन किया गया। तदोपरांत सड़क भूमिपूजन का कार्यक्रम पुर्वाटोला के स्कूल मैदान में आयोजित कार्यक्रम का संचालन किया गया। सर्वप्रथम पंडित के द्वारा विधिवत पूजा अर्चना कर पक्की सड़क के निर्माण हेतु भुमि पुजन किया गया, तदोपरांत मंचीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम गणेश बागड़े सरपंच पूर्वाटोला, राजू सैयाम सरपंच खांडाफरी, प्रभुदयाल किरमे सरपंच टेकरी, सरिता अमित घोंघड़े सरपंच थानेगाँव ने भुमीपूजन कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों का पुष्प गुच्छ से स्वागत किया। वहीं श्रीमती लाडे जी के द्वारा मेहमान हमारे पधारे आशीष हमें दे देना, करते हैं स्वागत मिलकर अरमान पूरे कर देना गीत के साथ सभी का स्वागत किया गया।

जनप्रतिनिधियों ने किया जनसभा को संबोधित-सड़क भूमिपूजन कार्यक्रम में जनसभा को संबोधित करते हुए सभापति दिनेश लांडे ने कहा कि यह मार्ग हमारे मांगपत्र में सर्वोपरि था जिसका विधायक हिना कावरे जी ने पुरा भी किया, हमारी और मांगें हैं उन्हें भी विधायक के द्वारा पुरा किया जाएगा, जिस तरह से जनता ने हम पर विश्वास किया है और यह उस विस्वास का परिणाम है कि हमें यह मार्ग मिला है। इसी कड़ी में जनपद पंचायत उपाध्यक्ष अजय अवसरे ने कहा कि विधायक हिना कावरे के द्वारा लगातार क्षेत्र में जनता की मांगों को लेकर पुरा किया जा रहा है। निश्चित ही दीदी दो बार विधायक बनी है यह आपके आशीर्वाद और विधायक के कार्य प्रणाली का परिणाम है। सभी मांगों को आगे पुरा किया जाएगा। इसी कड़ी में पुर्व जनपद अध्यक्ष देवेंद्र

खोंगल ने भी जनहित में अपनी बात मंच के माध्यम से जनता के सम्मुख रखीं।

गुणवत्ता के साथ समझौता नही- हिना कावरे विधायक-विधायक सुश्री हिना कावरे ने सड़क निर्माण कार्य का भूमिपूजन करने के पश्चात सभा को संबोधित करते हुए कहा कि पूर्वाटोला से सलंगटोला - खांडाफरी रोड की मांग काफी समय से की जा रही थी एवं सभी सरपंच इस मांग को लेकर चिंतित थे। पुर्व में किरमें जी सरपंच थे उन्होंने भी इस रोड के लिए बहुत कोशिश की। हमने भी इस रोड पर आवागमन किया, हमारी गाड़ी बीच में अटक गई और हमें लगा कि यह रोड बनाना बहुत जरुरी है। यह रोड़ बनने से इस रोड का फायदा सलंगटोला और खांडाफरी के लोगों को मिलेगा। आगे संबोधन में कहा कि विधायक होने के नाते हमारा कर्तव्य है कि जहां समस्याएं आएं उसका हम निदान करें । जितनी भी मांग मेरे पास आई, उन सभी कामों पर ध्यान दूंगी। खांडाफरी तालाब का एस्टीमेट भोपाल भिजवा दिया गया है। बजट की राशि से इस तालाब के कार्य को पूर्ण करेंगे यदि वहां से नहीं मिली तो हम अन्य योजना से राशि का प्रबंध कर इस कार्य को पूरा करेंगे। चुंकि तालाब का संबंध कृषि से है, यह तालाब निर्माण किसानों के लिए बहुत ही उपयोगी साबित होगा। पूर्वाटोला और खांडाफरी में ट्रांसफार्मर की मांग की गई है उसे विधायक निधि से पूरी की जाने की बात कही। गोसाईटोला टेकरी में पानी की समस्या बहुत बार ग्रामीणों द्वारा बताई गई, टेकरी में हैंडपंप मशीन भी भिजवाई गई थी लेकिन वहां पानी का स्तर कम होने के कारण वह सफल नहीं हो पाया उसके लिए दूसरी व्यवस्था करवाएंगे। आपने सभी जनप्रतिनिधियों की तारीफ करते हुए कार्यक्रम में शामिल होने के लिए सभी उपस्थिजनों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

गुणवत्ता के साथ नहीं होगा समझौता-विधायक हिना कावरे ने सड़क निर्माण को लेकर एसडीओ नेवारे एवं ठेकेदार चेतन जैन से स्पष्ट रूप से कहा कि यह रोड़ बड़े मेहनत से आई है, इसकी गुणवत्ता में कोई भी कमी नहीं रहनी चाहिए। सड़क निर्माण में कोई समझौता हम बर्दाश्त नहीं करेंगे। सभी जनप्रतिनिधि और ग्रामीण यदि आपको सड़क की गुणवत्ता में कोई भी कमी नजर आए आप सीधे मुझे बताए। काम गुणवत्तापूर्ण होना चाहिए। रोड कई सालों की मेहनत के बाद बन रही है रोड़ अच्छी बननी चाहिए।

यह रहें उपस्थित-उक्त कार्यक्रम में सुश्री हिना लिखीराम कावरे विधायक, मुकेश जोशी, श्रीमति अर्चना रेवेन्द्र खोंगल, अजय अवसरे, देवेंद्र खोंगल, ओमकार बाबा रहांगडाले, प्रमोद अग्रवाल, श्रीमती ममता दुबे, श्रीमती मनीषा धारणे, दिनेश लाडे, रेवाजी करहाटकरे, अमित घोघड़े, गणेश बागड़े, राजू सैयाम, प्रभुदयाल किरमे, सरिता अमित घोंघड़े, सुखराम नेवारे एसडीओ, सुश्री रितूल नखाते एसडीओ, चेतन जैन ठेकेदार, पुनम शरद आसटकर, अफसाना सिद्दीक अंसारी, मधुबाला सातपुते, निर्मला सोमनकर, शशीकला बिसेन, प्रभुदना किरमे, ओमप्रकाश दौने, श्रीचंद कामड़े, सुरेश नारनौरे, पवन कश्यप, आशिफ बेग, महेंद्र सोनवाने, एवं सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

पारस की वजह से उर्फी को नहीं मिला अनुपमा में रोल

टीवी शो में समर का रोल प्ले करने वाले एक्टर पारस कलनावत पिछले कुछ दिनों से सुर्खियों में बने हुए हैं। अपकमिंग रियलिटी टीवी शो 10 साइन करने की वजह से नाराज मेकर्स ने उनका का कॉन्ट्रैक्ट खत्म कर दिया और उन्हें तत्काल प्रभाव से शो से हटा दिया गया। शो में अनुपमा के छोटे बेटे का रोल प्ले करने वाले पारस कलनावत ने हाल ही में अनुपमा के रिएक्शन के बारे में बताया था और अब उन्होंने अपनी निजी जिंदगी को को लेकर भी प्रतिक्रिया दी है। पारस कलनावत ने एक इंटरव्यू में अपनी एक्स गर्लफ्रेंड उर्फी जावेद को लेकर अपनी प्रतिक्रिया दी और उनके उस बयान का जवाब दिया जिसमें उर्फी ने कहा था कि पारस बहुत ज्यादा पॉजेसिव हैं। कम ही लोग जानते हैं कि अनुपमा फेम एक्टर पारस कलनावत और उर्फी जावेद काफी

वक्त तक रिलेशनशिप में रहे हैं और बाद में दोनों ने अपने रास्ते अलग कर लिए थे। ये दोनों एक्टर स्द्धद्ध छ्ह्हद्दु टीवी शो में एक साथ काम करते नजर आए थे। हालिया इंटरव्यू में उर्फी जावेद ने कहा था कि पारस बहुत पॉजेसिव हैं और उन्होंने अनुपमा के मेकर्स से कहा था कि वह उर्फी को शो में ना लें। अब उर्फी जावेद के सवालों पर पारस कलनावत ने कहा, इस सब बारे में पलटवार करने के लिए मुझमें एक तरह का गुस्सा होना चाहिए। लेकिन मैं किसी के प्रति भी बुरी भावनाएं नहीं रखता हूं। पारस कलनावत ने कहा, अगर मुझे किसी से दिक्कत है तो मैं आगे आकर उस इंसान से बात करूंगा, बजाए उस इंसान के बारे में कुछ बुरा बोलने के। जब मैं लोगों को मेरे बारे में बुरा बोलते हुए देखता हूं तो मैं इसे बहुत शांत ढंग से स्वीकार करता हूं। मैं खुद से कहता हूं कि अगर इस इंसान को मुझे बुरा-भला बोलने में खुशी मिल रही है तो क्यों ना मैं इसकी खुशी में ही अपनी खुशी ढूंढ लूं। ये सारी चीजें मुझे प्रभावित नहीं करती हैं।

बॉलीवुड में काजोल को पूरे हुए 30 साल

बॉलीवुड की खूबसूरत और टैलेंटिड एक्ट्रेस काजोल के सिनेमा में 30 दशक पूरे हो गए हैं। 1992 में डेब्यू करने के बाद से काजोल ने एक से बढ़कर एक परफॉर्मेंस दिया है और दर्शकों का दिल जीता है। काजोल के खाते में कई हिट फिल्में शुमार हैं और सिनेमा में 30 साल पूरे होने पर अभिनेता अजय देवगन ने उन्हें बधाई दी है। अजय देवगन ने एक सोशल मीडिया पोस्ट किया है और काजोल के लिए एक स्पेशल नोट लिखा है। बॉलीवुड अभिनेता अजय देवगन ने सोशल मीडिया पोस्ट में काजोल को बॉलीवुड में 30 साल पूरे करने पर बधाई दी है। अजय देवगन ने फिल्म तानाजी- द अनसंग वॉरियर से एक तस्वीर शेयर की है, जिसमें उनके साथ काजोल नजर आ रही हैं। तस्वीर के साथ कैप्शन में अजय ने लिखा, सिनेमा में 3 दशक... और तुम ने बहुत बढ़िया किया है। सच कहूं तो सिर्फ अभी शुरुआत है, आने वाले बहुत सारे अचीवमेंट्स, फिल्में और यादों के लिए। बता दें कि काजोल ने अपने दम पर अपने लिए एक बड़ा मुकाम बनाया है। काजोल ने फिल्म बेखुदी से बॉलीवुड डेब्यू किया था। बेखुदी 31 जुलाई 1992 को रिलीज हुई थी, जिस में काजोल के साथ कमल सदाना नजर आए थे। फिल्म का निर्देशन राहुल रवैल ने किया था। फिल्म में काजोल ने राधिका का किरदार निभाया था, वहीं फिल्म में काजोल के मां के किरदार में तनुजा नजर आई थीं। काजोल ने अपने करियर में सिर्फ हिंदी ही नहीं अन्य भाषाई फिल्मों में भी दम खम दिखाया है।

काजोल ने एक ओर जहां साउथ फिल्मों में काम किया है तो कुछ फिल्मों के लिए आवाज भी डब की, जिसमें हॉलीवुड की एनिमेटिड फिल्म इंक्रेडिबल्स 2 भी शुमार है। काजोल की हिट बॉलीवुड फिल्मों की लिस्ट में बाजीगर, करण अर्जुन, हलचल, दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे, गुप्त, इश्क, प्यार किया तो डरना क्या, डुप्लीकेट, प्यार तो होना ही था, कुछ कुछ होता है, हम आपके दिल में रहते हैं, राजू चाचा, कभी खुशी कभी घम, कल हो न हो, फना, माई नेम इज खान, दिलवाले और तानाजी सहित कई और शामिल हैं।

अदनान सामी ने डिलीट नहीं आर्काइव किए थे अपने सभी इंस्टाग्राम पोस्ट्स

अपनी आवाज के जादू से हर किसी को अपना दीवाना बनाने वाले सिंगर अदनान सामी ने हाल ही में अपने इंस्टाग्राम के सभी पोस्ट्स डिलीट कर दिए थे। अदनान ने अपने सभी इंस्टा पोस्ट्स डिलीट किए और एक वीडियो को शेयर करते हुए लिखा- अलविदा। अदनान के इस अलविदा ने उनके सभी फैन्स को काफी परेशान कर दिया और सभी इसकी वजह जानने के लिए बेताब हो गए। ऐसे में अब खुद सिंगर ने बताया है कि उन्होंने ऐसा क्यों किया और क्या है %अलविदा% का मतलब। अदनान सामी के इंस्टाग्राम को अलविदा कहने से उनके फैन्स परेशान हो गए थे। ऐसे में अब हाल ही में टाइम्स ऑफ इंडिया से बातचीत के दौरान अदनान ने इस बारे में भी बात की। अदनान ने कहा, %आप इसे चाहें चालाकी कह दें या फिर बेवकूफी, लेकिन सोशल मीडिया से सारी पोस्ट्स डिलीट करने के पीछे मेरी हाल ही में सामने आई ट्रांसफॉर्मेशन रही। कोविड काल ने हम सभी को ये सोचने पर मजबूर कर दिया कि जिंदगी में हम किसी चीज को प्राथमिकता देना चाहते हैं... अदनान आगे कहते हैं, मैंने तय किया कि मैं एक बार फिर म्यूजिक बनाऊंगा। ये बदलाव मेरे लिए सिर्फ शारीरिक नहीं बल्कि मानसिक भी रहा। मैं एक बार फिर अच्छे म्यूजिक को बनाने की सोचने लगा। और इसलिए मैंने खुद को अदनान 2.0 कह दिया, इंस्टा पर भी। ऐसे में मैंने सोचा कि इस बदलाव के चलते ही ये एक अच्छा आइडिया होगा कि मैं अपने पुराने सभी सोशल मीडिया पोस्ट्स को आर्काइव कर दूं। बातचीत में अदनान ने ये भी बताया कि उन्होंने अपने इंस्टाग्राम पोस्ट्स डिलीट नहीं किए हैं, बल्कि आर्काइव किए हैं। अदनान ने अलविदा को लेकर कहा कि ऊपर वाला न करे लेकिन अगर मुझे खुद को खत्म ही करना होता तो सिर्फ मैं कैप्शन में अलविदा लिख देता, न कि एक बेहतरीन सा सिनेमैटिक लोगो बनाता अलविदा का।

सुजैन खान ने अर्सलान गोनी पर बरसाया प्यार

बॉलीवुड अभिनेता ऋतिक रोशन की एक्स वाइफ सुजैन खान का नाम बीते कुछ वक्त से अर्सलान गोनी के साथ जुड़ रहा है। अर्सलान गोनी और सुजैन खान अक्सर साथ में वक्त बिताते नजर आते हैं, वहीं सोशल मीडिया पर भी ये दोनों अपने फोटोज और वीडियोज शेयर करते हैं जो फैन्स को पसंद आते हैं।सुजैन और अर्सलान के वेकेशन फोटोज सामने आए हैं, जिन्हें शेयर करते हुए सुजैन ने एक स्पेशल कैप्शन भी लिखा है। सुजैन ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो शेयर किया है। ये वीडियो सुजैन और अर्सलान के वेकेशन फोटोज से बना है। वीडियो में दिख रही तस्वीरों में दिख रहा है कि सुजैन और अर्सलान साथ में कितना एन्जॉय कर रहे हैं और दूसरे संग क्वालिटी टाइम बिता रहे हैं। सोशल मीडिया यूजर्स इस वीडियो को पसंद कर रहे हैं और शेयर कर रहे हैं। वीडियो पर प्रीति जिंटा के साथ ही कुछ और सेलेब्स ने भी रिएक्ट किया है। वहीं कई फैन्स भी दोनों के वीडियो पर कमेंट कर चुके हैं। सुजैन खान ने इस फोटो वीडियो को शेयर करते हुए एक स्पेशल कैप्शन भी लिखा है।

वीडियो के साथ सुजैन ने कैप्शन में लिखा, मुझे नहीं पता कि तुम्हें क्या बताया गया है, लेकिन वक्त बीत रहा है, तो ऐसे सोने की तरह खर्च करो। थैंक्यू सो मच मेरे प्यारे कैलिफोर्निया, हमें हमारा बेस्ट समर देने के लिए। अपने कैप्शन में सुजैन ने बिजली, लाइट, दिल, कैमरा और वेव्स जैसे कई इमोजीस का इस्तेमाल किया है। याद दिला दें कि कुछ वक्त पहले प्रीति जिंटा ने फोटोज शेयर किए थे, जिन में ऋतिक- सुजैन सहित कुछ अन्य सेलेब्स नजर आए थे। तस्वीरों में प्रीति जिंटा के साथ ही उनके पति जीन गुडइनफ, ऋतिक रोशन, सोनाली बेंद्रे, सुजैन खान और अर्सलान गोनी मौजूद थे। पोस्ट के कैप्शन में प्रीति ने लिखा था, 'एक यादगार रात।% बता दें कि ऋतिक और प्रीति अच्छे दोस्त हैं और फिल्म कोई मिल गया और लक्ष्य में साथ काम कर चुके हैं। गौरतलब है कि एक ओर जहां सुजैन खान का नाम अर्सलान गोनी के साथ जुड़ता है तो दूसरी ओर ऋतिक रोशन भी इन दिनों सबा खान संग रिलेशनशिप की खबरों को लेकर चर्चा में रहते हैं। बता दें कि ये चारों भी साथ में वक्त एन्जॉय करते नजर आ चुके हैं और इनके फोटोज सोशल मीडिया पर वायरल हुए थे। बता दें कि अभी तक इन चारों में से किसी ने भी रिलेशनशिप पर आधिकारिक तौर पर कोई भी बयान नहीं दिया है।

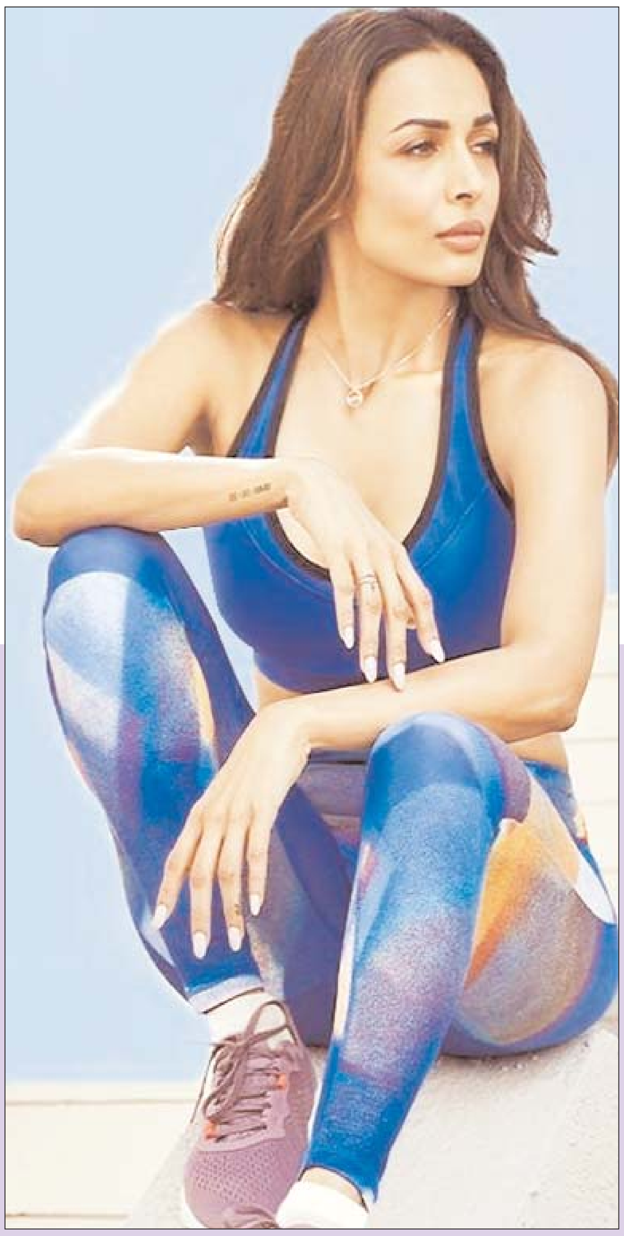

बॉलीवुड में हुईं बैन, एक्ट्रेसेस नहीं करती थीं बात

31 जुलाई 1947 को मुंबई में जन्मीं मुमताज अपना 75वां जन्मदिन मना रही हैं। अभिनेत्री मुमताज का करियर उनके वक्त की बाकी अभिनेत्रियों से काफी अलग रहा था। कभी एक्टर्स ने उनके साथ काम करने से इनकार किया तो कभी खुद मुमताज ने चुनिंदा अभिनेताओं के साथ स्क्रीन शेयर करना ठीक नहीं समझा। मुमताज के बारे में कहा जाता है कि उनके साथ ही एक्ट्रेसेस उनसे बात नहीं करती थीं, वहीं एक वक्त ऐसा भी था जब मुमताज पर बैन लग गया था। मुमताज के जन्मदिन पर जानें एक्ट्रेस से जुड़े किस्से...मुमताज ने अपने करियर में कई अभिनेताओं के साथ काम किया। हालांकि मिड डे की एक रिपोर्ट के मुताबिक

मुमताज ने अमिताभ के शुरुआती वक्त में उनके साथ काम करने से इनकार कर दिया था, क्योंकि उस वक्त वो एक सक्सेसफुल एक्टर नहीं थे। वैसे बता दें कि 1973 में अमिताभ ने पहली बार फिलल्म बंधते हाथ में डबल रोल निभाया था, जिस में उनके साथ मुमताज नजर आई थीं। बॉलीवुड में कुछ ऐसी एक्ट्रेसेस रही हैं, जिन्होंने अपने करियर की बुलंदी पर सिनेमाई दुनिया को अलविदा कह दिया और उन्हीं में एक नाम मुमताज का भी रहा है। मुमताज ने 1974 में मयूर मधवानी से शादी की थी और अपने बचे हुए प्रोजेक्ट्स को पूरा करने के बाद सिनेमा को अलविदा कह दिया था। उस वक्त मुमताज एक बड़ा नाम हुआ करती थीं और करीब- करीब हर अभिनेता- निर्देशक उनके साथ काम करना चाहता था। याद दिला दें कि 1990 में मुमताज ने आंधियां से कमबैक किया था, लेकिन फिल्म फ्लॉप हुई तो मुमताज ने बाकी प्रोजेक्ट्स को इनकार कर दिया।

मलाइका अरोड़ा ने किया कुछ ऐसा काम कि अर्जुन कपूर ने दी फ्लाइंग किस

इन दिनों फिल्म एक विलेन रिटर्न्स को लेकर चर्चा में बने हुए अभिनेता अर्जुन कपूर अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर भी खूब चर्चा में रहते हैं। अर्जुन कपूर, बॉलीवुड की खूबसूरत व सुपरफिट एक्ट्रेस मलाइका अरोड़ासंग रिलेशनशिप में हैं। अर्जुन- मलाइका जब भी साथ होते तो चर्चा में आ जाते हैं। ऐसे में हाल ही में अर्जुन कपूर ने जब रैंप वॉक की तो मलाइका भी शो में शामिल रहीं और दोनों के बीच के प्यार ने फैन्स का फिर दिल जीत लिया है। दरअसल हाल ही में अर्जुन कपूर ने कुणाल रावत के लिए रैंप वॉक किया। शो में अर्जुन कपूर ने जहां रैंप वॉक किया तो दूसरी ओर मलाइका अरोड़ा ऑडियंस में मौजूद रहीं। इस रैंप वॉक से कई वीडियोज सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं। किसी वीडियो में दिख रहा है कि अर्जुन कपूर के लिए मलाइका अरोड़ा खूब तालियां बजा रही हैं और सपोर्ट करते हुए उनका वीडियो भी रिकॉर्ड कर रही हैं। वहीं एक वीडियो में मलाइका अरोड़ा को अर्जुन कपूर फ्लाइंग किस देते दिख रहे हैं। वहीं किसी वीडियो में मलाइका की स्माइल और एक्साइटमेंट अर्जुन को देखने के बाद देखने लायक है। अर्जुन ने दी मलाइका को फ्लाइंग किस। सोशल मीडिया यूजर्स मलाइका अरोड़ा और अर्जुन कपूर के इन वीडियोज को खूब पसंद कर रहे हैं। कई फैन्स ने मलाइका को एक परफेक्ट गर्लफ्रेंड बताया है जो अपने ब्वॉयफ्रेंड को खूब सपोर्ट कर रही हैं। एक यूजर ने लिखा, कितनी प्यारी जोड़ी है। एक दूसरे सोशल मीडिया यूजर ने लिखा, ये दोनों जल्दी शादी कर लें, कैमिस्ट्री ने दिल खुश कर दिया। वहीं एक और ने लिखा, यार ये कितनी ऑसम है, प्यार हो तो ऐसा। गौरतलब है कि अर्जुन कपूर और मलाइका अरोड़ा बीते लंबे वक्त से रिलेशनशिप में हैं। शुरुआती वक्त में दोनों ने इसे सभी से छिपाकर रखा था और इस बारे में कुछ भी कहने से बचते थे। वहीं कुछ वक्त बाद सोशल मीडिया पर इनके फोटोज वीडियोज सामने आने लगे और कपल भी एक दूसरे के पोस्ट्स पर रिएक्ट करने लगा। ऐसे में धीरे धीरे कुछ वक्त के बाद इस बारे में कपल खुलकर बात करने लगा। बता दें कि फैन्स को इनकी शादी का बेसब्री से इंतजार है।

हृदय से बड़ा प्रभु का कोई मंदिर नहीं - स्वामी किशोर दास जी महाराज

बुंदेलखंड कि भूमि में अनेक संतो ने जन्म लिया और आज भी जन्म ले रहे है, यह वंदनीय भूमि है - श्री किशोर दास जी महाराज

गुरुदेव

पत्रकारों को आशीर्वाद

पुष्पांजली टुडे

दमोह।शहर के स्थानीय तहसील मैदान में चल रही श्री वृंदावन धाम वासी गोरेलाल निकुंज आश्रम के परम पूज्य श्री श्री 108 महंत श्री स्वामी किशोर दास देव जू महाराज के मुखारविंद से भक्तमाल कथा का आयोजन द्वितीय दिवस सम्पन्न हुआ। श्री महंत किशोर दास जू ने अपने प्रवचन में कहा कि परमात्मा का मंगलमय दर्शन हो जाए तो क्या यह संभव हैड़ नहीं लेकिन भक्तमाल का मूल प्राण है और प्रभु बिहारी जी कहते हैं कि मेरा दर्शन अमोघ और दुर्लभ है। जिनके अंतकरण में हम सदैव सर्वदा विराजमान रहते हैं ऐसे पूर्वाचार्य, संत चरण जो सदा सर्वदा मेरा नाम, रूप, लीला धाम में रख रस मगन होकर मेरी भक्ति में डूबे रहते. जिनकी कोई कभी चाह कामना नहीं होती. जिनके अंतःकरण में यदि कोई चाह कामना है। तो वह केवल मेरे चरण कमल के अलावा उनके चित में कोई गति नहीं और ना ही कोई मति है और यदि मती है।तो मेरे चरण कमल और कोई गति है तो मेरे चरण कमल। ऐसे हदयवान हे मेरे भक्तों, भगवान का बसेरा कहां है कहेंगे कि भगवान कहां निवास करते हैं तो लोग कहते हैं कि मंदिर में मिलेंगे, नहीं जब मिलेंगे जहां मिलेंगे भक्तों के हृदय कमल में मिलेंगे।इसके अतिरिक्त इससे बड़ा कोई मंदिर नहीं है हदय ही मन मंदिर है यही श्री वृंदावन धाम है। अपने हृदय मन में अपने प्राण धन को एक बार विराजमान करें।अगर एक बार बिहारी जी को छू लिया अगला जन्म लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी।आचार्यो ने संग का बहुत बार प्रसंग दिया।अगर हमारे संग साधु पुरुषों का हो जाये। तो हमारा पुण्य फल प्राप्त हो गया, हमारे मन वृत्ति के ऊपर कोई आवरण न जाये. जो हमारी भक्ति महारानी में कोई दोष न जाये. जब प्रेमियों का संग करेंगे तो हम भी प्रभु के प्रेमी एक दिन बन जाएंगे, जीवन मे हमारे संत मिल जाये सत्संग मिल जाये तो एक न एक दिन भक्ति महारानी हमारे अंतःकरण में विराजित होगी। यह बुंदेलखंड भूमि में अनेक संतो ने जन्म लिया,और आज भी जन्म ले रहे है,यह वंदनीय भूमि है।इस अवसर पर दूसरे दिन की भक्तमाल कथा में पधारे श्री जैजै सरकार फतेहपुर वाले, पंडित मदन मोहन दीक्षित, विधायक दमोह अजय टंडन, अभा असाटी समाज राष्ट्रीय अध्यक्ष वीरेंद्र असाटी बडामलहरा,पंडित मोनू पाठक,पंडित चंद्रगौपाल पौराणिक, पंडित महेंद्र दुबे, बूंदाबहु मंदिर के पुजारी रामेश्वर शर्मा, भाजपा महामंत्री पंडित सतीष तिवारी, बटियागढ़ से नरेंद्र व्यास, सेवानिवृत्त शिक्षक जेपी असाटी, असाटी समाज अध्यक्ष आलोक असाटी, ओमप्रकाश,जगदीश, सचिन असाटी गुडिया इंटरप्राइजेज,मुरारी असाटी, शैलजा प्रसून असाटी दलाल,कथा आयोजक सौरभ संदेश असाटी सुपाडी वाले का परिवार, मनोज देवलिया,अजित उपाध्याय, इंजी महेश असाटी, नवल असाटी, आशीष राय, मनोज प्यासी, राजुल चौराहा, आलोक चौबे सहित भक्तों को आरती और माल्यार्पण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।पत्रकारों का स्वामी जी ने किया सम्मान- भक्तमाल कथा के दूसरे दिन कथा समाप्ति के बाद स्वामी श्री किशोर दास जूदेव जी महाराज ने समस्त पधारे हुए पत्रकारो को आशीर्वाद दिया।

सरकार की सद्धुद्धि के लिए आशा उषा कार्यकर्ताओं ने बालाजी भगवान को दिया ज्ञापन

अनिल कुशवाह प्रभारी
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी-खबर शिवपुरी जिले की तहसील नरवर से है जहाँ आज आशा उषा कार्यकर्ताओं और सुपरवाइजर ने नरवर के बालाजी हनुमान मंदिर मैं सरकार की सदबुद्धि के लिए ज्ञापन दिया दिया है ज्ञापन मैं उन्होंने बताया कि वह शासकीय योजनाओं को बहुत ही अल्पमान देय में स्वास्थ्य सेवाओं में 24 घंटे समर्पित भाव से संलग्न है परंतु हम लोगो की समस्याओं पर शासन ध्यान नही दे रही है मातृ मृत्यु एवं शिशु मृत्यु दर में काफी गिरावट आई हैं पूरे मध्यप्रदेश में 85000 आशा ऊषा कार्यकर्ता हैं जो रात दिन अपनी जान जोखिम मैं डालते हैं और कार्य करती हैं अभी हाल ही मैं आशा उषा के कार्यो से जनसंख्या में भी का?ी हद तक कमी आई और नियंत्रण बना रखा हैं मध्यप्रदेश में जनसंख्या को रोका जा सकता है इन सभी समस्याओं को भविष्य में बेहतर परिणाम हासिल हो सकते है इसके लिये कम से कम जीविका राशि 15000 उक्त आशा ऊषा एवं आशा सुपरवाईजर को मिलना चाहिए यही हमारी मांग है हम सभी ने कोविंड वैक्सीनेशन में भी भरकम काम किया लेकिन शिवपुरी जिले में कोविड वैक्सीनेशन का भुगतान नहीं दिया जाए और दूसरा हमारे साथ आयुष्मान नई बनाने से शिवपुरी को अच्छे परिणाम मिल है लेकिन अभी तक वो समुदाय तक नहीं पहुंचाये गये तो समुदाय के लोगों का हमारे प्रति विश्वास कमजोर होता जा रहा है क्योंकि हमको सम्मुदाय के बीच रहकर ही कार्य करना है माननीय महोदय जी इस समस्या का समाधान शीघ्र किया जाये आगामी समय में हम आयुष्मान कार्ड बनाने का वष्हिकार करते हैं।

लापरवाही ओं के बीच फसा रहा है मेडिकल कॉलेज

मेडिकल कॉलेज में मरीज के दाया हाथ की जगह कर रहे बाया हाथ का ऑपरेशन

अनिल कुशवाहा प्रभारी पुष्पांजलि टुडे शिवपुरी- खबर शिवपुरी जिला मुख्यालय

कलेक्ट्रेट परिसर में ज्ञापन देने आई रचना शाक्य ने बताया कि वह मेडिकल कॉलेज में अपने रचना शाक्य दिनांक 28.12. 2022 को डॉ. पका कर्मा जी को ओपीडी में अपने चार्य हम का इलाज कराने मेडिकल कॉलेज शिवपुरी में गये थे जिसमें डी द्वारा हमे ऑपरेशन के लिए का गया साथ में जाये कराने को दी इसके बाद 20-12-2022 को हम मरीज को लेकर भर्ती हो गये जिसमें दूसरे दिन डॉ राउन्ड पर जाये और कहा की शनिवार को हाथ का ऑपरेशन है व अन्य जाचे कराई गई जिसमे एक बेहोशी की जांच थी जिसके लिए हमे निश्चेतना विभाग में भेजा गया जिससे हमारी हुई वहीं पर विभाग के द्वारा पूछा गया की आप के किस हाथ में फैक्चर है तो हमारे द्वारा हमारे दाहिने हाथ में फैक्चर है पर आपकी फाइल में तो बाथ के ऑपरेशन का लिखा गया है और आपका पूरा इलाज बाएं हाथ का ही किया गया है और उन्होंने पूछा की आपको कोई बीमारी तो नहीं है तो हमारे द्वारा बताया की मरीज को अस्थमा की शिकायत रहती है फिर डॉ ने हमारी फाइल को ऑर्थोविभाग में भेज दिया लेकिन हमारा अस्थमा का कोई इलाज नहीं किया गया समस्त स्टाफ द्वारा ब उसके साथ वाले के साथ अभद्रताजनक व्यवहार किया इस कारण हमारे मरीज को मानसिक शारीरिक हानि पहुंची है दूसरे दिन शनिवार को हम एस एम में शिवांगी मेंम के पास अपनी शिकायत को लेकर की तो उन्हें भी संतोषजनक उत्तर नहीं दिया हमारी छुट्टी के लिए बोल दिया और हम पर ही आरोप लगाने लगे कि मरीज भाग गया इस प्रकार की लापरवाही लगातार मेडिकल कॉलेज से देखने को मिल रही है लेकिन मेडिकल कॉलेज में आए दिन ऐसी शिकायत होती रहती हैं लेकिन इस पर किसी प्रकार का ध्यान नहीं दिया जा रहा है

अति. पुलिस महानिदेशक एवं पुलिस महानिरीक्षक ग्वालियर द्वारा किया गया पेट्रोल पंप परिसर मे नव निर्मित एटीएम का उद्घाटन

अनिल कुशवाह प्रभारी
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी-अति. पुलिस महानिदेशक एवं पुलिस महानिरीक्षक ग्वालियर झोन ग्वालियर श्री डी श्रीनिवास वर्मा द्वारा आज दिनांक को पुलिस पेट्रोल पंप परिसर शिवपुरी मे नव निर्मित भारतीय स्टेट बैंक के एटीएम का उद्घाटन किया । कलेक्टर शिवपुरी श्री अक्षय कुमार एवं पुलिस अधीक्षक शिवपुरी श्री राजेश सिंह चंदेल द्वारा पेट्रोल पंप पर आने बाले ग्राहकों की सुविधा के लिये भारतीय स्टेट बैंक के सहयोग से पोहरी चौराहे के पास स्थित पुलिस पेट्रोल परिसर मे एटीएम की स्थापना कराई गई है, पेट्रोल पंप पर आने बाले लोगों को कई बार ओनलाइन पेमेंट मे सर्वर डाउन के कारण परेशानी होने पर व कैश निकासी के लिये आमजन को एटीएम की सुबिधा उपलब्ध कराई गई है । इससे पेट्रोल पंप एवं पोहरी चौराहा क्षेत्र के लोगों को एटीएम से कैश निकासी के लिये दूर नहीं जाना होगा । बाद अति. पुलिस महानिदेशक एवं पुलिस महानिरीक्षक ग्वालियर झोन ग्वालियर जिला शिवपुरी मे नये भर्ती हुये नव आरक्षकों से पुलिस कन्ट्रोल रुम मे चर्चा की एवं नव आरक्षकों को प्रशिक्षण के संबंध मे महत्वपूर्ण जानकारियां दी । इस अवसर पर अति. पुलिस अधीक्षक शिवपुरी श्री प्रवीण कुमार भूरिया, एसडीओपी शिवपुरी श्री अजय भार्गव, रक्षित निरीक्षक श्री भारत सिंह यादव, थाना प्रभारी कोतवाली, देहात, फिजीकल एवं सूबेदार भानुप्रताप एवं एसबीआई के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

गुना जिले से चोरी मूर्ति सहित आरोपी को शिवपुरी पुलिस ने किया गिरफ्तार

अनिल कुशवाह प्रभारी
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी- खबर शिवपुरी के कोतवाली से है जहाँ दिनांक 05.01.23 को पुलिस अधीक्षक जिला शिवपुरी को विश्वसनीय सूत्रों से सूचना प्राप्त हुई कि गुना जिले के जामनेर थाने के बूडीवरसत मंदिर धर्मशाला से दिनांक 08.11.22 की रात्रि को पत्थर की बनी दो प्राचीन मूर्ति चोरी की गई थी उक्त चोरी हुई मूर्ति आरोपी रामहेत यादव पुत्र रामचरण यादव निवासी सूड थाना सिरसौद जिला शिवपुरी एवं सिरनाम रावत पुत्र रमेश रावत निवासी गिरवानी थाना गोवर्धन जिला शिवपुरी का बेचने की फिराक में ले जा रहे है इस पर से पुलिस अधीक्षक श्री राजेश सिंह चन्देल ने घटना को गम्भीरता से लेते हुए थाना प्रभारी कोतवाली श्री अमित सिंह भदौरिया को पुलिस टीम बनाकर चोरी गई मूर्ति को बरामद करने हेतु आदेश दिया गया। इस पर से अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री प्रवीण भूरिया एव अनुविभागीय अधिकारी पुलिस अनुभाग शिवपुरी श्री अजय भार्गव के मार्गदर्शन में कोतवाली थाना प्रभारी अमित सिंह भदौरिया के उ.नि. अरविंद छारी, सउनि अमृतलाल, सउनि आविद खांन प्र. आर. 142 नरेश यादव प्रआर0 26 कुलदीप शर्मा आर. 767 अजीत राजावत, आर. 206 भूपेन्द्र यादव, आर. 978 टिंकू सिह,आर.1001 पवन जाट की टीम ने आरोपी रामहेत के कब्जे से झिरने वाले मंदिर के पीछे सूड नदी से पत्थर की बनी प्राचीन विष्णु भगवान की मूर्ति जप्त की एवं आरोपी सिरनाम रावत मौके से मूर्ति फेंककर भाग गया। सिरनाम द्वारा फेंकी गई पत्थर की प्राचीन गणेश जी की मूर्ति जप्त की गई। दोनो प्राचीन मूर्तियों की अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत करीबन एक करोड रूपये है। चोरी गई मूर्ति बरामद करने में कोतवाली थाना प्रभारी अमित सिंह भदौरिया उ.नि. अरविंद छारी, सउनि अमृतलाल, सउनि आविद खांन प्र. आर. 142 नरेश यादव ,प्रआर0 26 कुलदीप शर्मा आर. 767 अजीत राजावत, आर. 206 भूपेन्द्र यादव, आर. 978 टिंकू सिंह की सराहनीय भूमिका रही

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478